अमृत विचार

लोक दर्पण

रविवार, 7 जुलाई 2024 www.amritvichar.com

बढ़ती आबादी हांफते संसाधन

दिल्ली, कोलकाता जैसे महानगरों में भीड़ से खचाखच भरी मेट्रो, कानपुर, लखनऊ, पटना के रेलवे स्टेशनों पर यात्रियों का मेला, ट्रेनों में पैर रखने की जगह नहीं, शहरों में यातायात जाम से जूझते लोग, धर्म स्थल हों या अस्पताल हर कहीं लंबी लाइन, छोटी-छोटी परीक्षाओं के लिए उमड़ते हजारों आवेदक, आबादी के बोझ से हांफती जन सुविधाएं, समय से पहले ध्वस्त होता बुनियादी ढांचा, 80 लाख से अधिक लोगों को मुफ्त राशन वितरण की मजबूरी, फैक्ट्री बनते उच्च शिक्षा संस्थान, रोजगार के अवसरों की कमी से बेरोजगारों की बढ़ती फौज, मुंबई, चेन्नई और हैदराबाद जैसे मेट्रो सिटी में आसमान छूती बहुमंजिला इमारतों को मुंह चिढ़ाती झोपड़ पट्टियों का बढ़ता साम्राज्य, सार्वजनिक स्थलों पर आवाजाही में धक्का-मुक्की जैसे हालात। विकसित भारत की यात्रा पर आगे बढ़ रहे देश को आज हर कहीं कुछ ऐसे ही हालातों से गुजरना और जूझना पड़ रहा है। दुनिया में आबादी के मामले में चीन को पछाड़कर पहले नंबर पर स्थान बना चुके भारत के सामने विश्व जनसंख्या दिवस पर सबसे बड़ा सवाल यही है कि आखिर यह सिलसिला कैसे और कब रुकेगा? किस तरह संभव होगा लगातार बढ़ती जनसंख्या पर नियंत्रण?

डॉ. क्षमा त्रिपाठी
प्रोफेसर, डी.जी.पी.जी कॉलेज, कानपुर

आबादी के विस्तार के साथ विकास संबंधी चुनौतियां जहां सुरसा के मुंह की तरह तेजी से बड़ी होती जा रही हैं, वहीं व्यवस्था की क्षमता को गिरावट की तरफ धकेल रही हैं। प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव तेजी से बढ़ रहा है। इससे जमीन, पानी, जंगल और खनिज की कमी का सामना करना पड़ रहा है। वनों की कटाई और बढ़ता शहरीकरण वायु तथा जल प्रदूषण को बढ़ा रहा है। आवास, परिवहन, स्वास्थ्य, सफाई और शिक्षा से जुड़ा बुनियादी ढांचा खर्च बढ़ने के बावजूद छोटा पड़ता जा रहा है। इन हालात में आबादी के बड़े हिस्से की जरूरतों को पूरा करना कठिन काम बन गया है। पर्याप्त संख्या में रोजगार उपलब्ध नहीं होने से आर्थिक असमानता के साथ गरीबी और बढ़ने का खतरा मंडरा रहा है।

दुनिया की आबादी 1 अरब होने में हजारों साल लग गए थे, लेकिन आंकड़े गवाह हैं कि 1 अरब से 7 अरब तक पहुंचने की यात्रा 200 साल में तय कर ली गई। साल 2011 में दुनिया की आबादी करीब 7 अरब थी, जो 2021 में बढ़कर 7.9 अरब हो गई। आज दुनिया की आबादी 8.2 अरब से आगे निकल गई है। संयुक्त राष्ट्र संघ का अनुमान है कि साल 2030 तक दुनिया की आबादी 8.5 अरब, 2050 तक 9.7 अरब और इस सदी के अंत तक 11 अरब का आंकड़ा छू सकती है। इसीलिए तेजी से बढ़ती जनसंख्या पर चिंता के साथ अधिक गंभीर दृष्टिकोण अपनाने के लिए संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (यूएनडीपी) ने 11 जुलाई 1987 को पहली बार विश्व जनसंख्या दिवस मनाने का आह्वान किया था। यह विचार दुनिया की आबादी 5 अरब पहुंचने पर आया था। इसके बाद से अधिकतर देशों में 11 जुलाई को विश्व जनसंख्या दिवस मनाया जाता है, ताकि जनसंख्या से जुड़ी बढ़ती समस्याओं के बारे में जागरूकता पैदा करने के साथ चुनौतियों के विभिन्न पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करते हुए जरूरी समाधान खोजकर लागू किए जा सकें। 1987 के 5 अरब से आगे बढ़ते हुए 1994 में दुनिया की आबादी जब 5.5 अरब को पार कर गई, तब कैलिफोर्निया की स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं ने गणना की थी कि दुनिया में मानव आबादी का आदर्श आकार 2 अरब होना चाहिए, लेकिन आज तो आबादी इससे चार गुना ज्यादा से भी आगे निकल चुकी है। अर्थशास्त्री माल्थस के अनुसार जनसंख्या को जब बेलगाम छोड़ दिया जाता है तो वह ज्यामितीय अनुपात में बढ़ती है, वहीं जीवनयापन के साधन अंकगणितीय अनुपात में ही बढ़ते हैं। कहने का आशय यह है कि आबादी जितनी तेजी से बढ़ती है, उसकी तुलना में संसाधनों का उत्पादन और आपूर्ति बहुत धीमी गति से बढ़ती है। यही वजह है कि जनसंख्या नियंत्रण आज एक बड़ा मुद्दा है। जनसंख्या विस्तार के कारण ही आज हम पर्यावरण से जुड़ी अनेक समस्याओं से जूझ रहे हैं, चाहे वह जलवायु परिवर्तन हो या जैव विविधता का नुकसान, जल संकट हो या भूमि संघर्ष, सबका संबंध बढ़ती आबादी से है।

क्या है जन्म दर

यह भी एक स्थापित तथ्य है कि भारत में जनसंख्या समान रूप से नहीं बढ़ रही है। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण के अनुसार, संपत्ति तथा धन के आधार पर कुल प्रजनन दर में विभिन्नता देखने को मिलती है। यह सबसे निर्धन समूह में 3.25 बच्चे प्रति महिला, मध्य समूह में 2.51 बच्चे तथा उच्च समूह में 1.50 फीसदी बच्चे प्रति महिला हैं। इससे साफ है कि समाज के आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों में जनसंख्या वृद्धि की रफ्तार अधिक है। यही वजह है कि गरीबी, भूख और कुपोषण की समस्या को प्रभावी ढंग से दूर करने और बेहतर स्वास्थ्य एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने में बाधा आ रही है। विश्व बैंक और यूनिसेफ द्वारा के नए विश्लेषण से पता चलता है कि दुनिया में अत्यंत गरीबी की मार झेल रहे लोगों में आधे से ज्यादा यानी 52.5 फीसदी बच्चे हैं। इस तरह अत्यधिक गरीबी में रहने वाला हर दूसरा इंसान, एक बच्चा है। रिपोर्ट के मुताबिक वैश्विक स्तर पर साल 2022 में बच्चों की 15.9 फीसदी आबादी ऐसे घरों में रह रही थी, जो बेहद गरीबी का शिकार थे। भारत के मामले में 11.6 फीसदी बच्चे बेहद गरीब घरों में रह रहे हैं। देश में गरीबी में जीवनयापन करने वाले बच्चों का कुल आंकड़ा करीब 5.4 करोड़ है।

टू चाइल्ड पॉलिसी समय की मांग

वर्ष 2019 में जनसंख्या नियंत्रण बिल लाया गया था। इसके अनुसार प्रत्येक विवाहित जोड़े को अधिकतम दो बच्चे की नीति अपनानी थी। इससे अधिक बच्चे पैदा करने पर दंड और सरकारी योजनाओं से वंचित करने का प्रावधान था। हालांकि साल 2022 में इस विधेयक को वापस ले लिया गया। इस नीति का उद्देश्य शैक्षिक लाभ, मुफ्त स्वास्थ्य सेवा, बेहतर रोजगार के अवसर, होम लोन और टैक्स कट के माध्यम से दो बच्चों के मिशन के लिए लोगों को प्रोत्साहित करना था। इस बिल का विरोध इस आधार पर हुआ कि 1969 का डिक्लेरेशन ऑन सोशल प्रोग्रेस एंड डेवलपमेंट का अनुच्छेद 22 यह सुनिश्चित करता है कि प्रत्येक विवाहित युगल को स्वतंत्रता है कि उनके कितने बच्चे हों। बच्चों की संख्या को नियंत्रित करना अनुच्छेद 16 और 21 यानी जीवन की सुरक्षा और स्वतंत्रता जैसे संवैधानिक अधिकारों का उल्लंघन करता है। हालांकि देश में टू चाइल्ड पॉलिसी को आजादी के बाद से अब तक 35 बार संसद में पेश किया जा चुका है। 2017 में असम विधानसभा ने पॉप्युलेशन एंड वुमन एंपावरमेंट पॉलिसी पास की थी। इसके अनुसार वही उम्मीदवार सरकारी नौकरी के योग्य होंगे जिनके दो बच्चे होंगे। इसके साथ ही जो पहले से ही सरकारी नौकरियों में हैं, उन्हें भी टू चाइल्ड पॉलिसी अपनाने का निर्देश दिया गया था। 2021 में उत्तर प्रदेश के लॉ कमीशन ने एक प्रस्ताव दिया था कि दो से अधिक बच्चों वाले लोगों को किसी भी सरकारी सुविधा का लाभ नहीं दिया जाए, लेकिन यह ड्राफ्ट बिल अभी विचाराधीन स्थिति में है।

शहरों में बढ़ती भीड़

एक बड़ी आबादी भीड़भाड़ तो बढ़ाती ही है। शहरीकरण को भी बढ़ावा देती है। दुनिया के लिए साल 2007 पहला ऐसा साल था, जब ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में शहरी इलाकों में अधिक लोग रहने लगे। ऐसा अनुमान है कि 2050 तक दुनिया की करीब 65 फीसदी आबादी शहरों में रह रही होगी। इतनी बड़ी संख्या में शहरीकरण से अपराधों में बढ़ोतरी हो सकती है और कानून व्यवस्था कायम रखने की कोशिशों पर दबाव और बढ़ सकता है। वैसे ही विकासशील देशों में मानवाधिकारों और लैंगिक समानता के खिलाफ अपराध पहले की तुलना में अधिक हो रहे हैं। बाल श्रम और मानव तस्करी और बढ़ने का खतरा है। प्राकृतिक संसाधनों जमीन, पानी, जंगल और खनिज का दोहन विकराल हो सकता है। शहरों का बुनियादी ढांचा बड़ी आबादी की जरूरतों के आगे चरमरा सकता है और आबादी का एक हिस्सा बदहाल जीवन जीने के लिए मजबूर हो सकता है। आशंका यह भी है कि बहुत से युवा अच्छी शिक्षा हासिल नहीं कर पाएंगे और बहुत से लोगों के पास जो कौशल होगा वो नौकरी के बाजार से मेल नहीं खाएगा। ऐसे में गरीबी कम करने की कोशिशों को धक्का लगेगा।

आर्थिक विकास में बाधा बढ़ती जनसंख्या

किसी भी देश की जनसंख्या को घटाने या बढ़ाने में मुख्यतः तीन कारक प्रमुख होते हैं, जन्म दर, मृत्यु दर तथा आवास-प्रवास। जन्म दर अधिक एवं मृत्यु दर कम होने पर जनसंख्या बढ़ती है। जन्म दर कम हो तथा मृत्यु दर अधिक हो तो जनसंख्या में कमी आती है। इसी तरह यदि दूसरे देशों से आने वालों की संख्या विदेश जाने वाले लोगों से अधिक होगी तो जनसंख्या में वृद्धि होगी और विपरीत स्थिति में कमी आएगी। वर्तमान में भारत की जनसंख्या 140 करोड़ का आंकड़ा पार कर चुकी है। आबादी के इस समुद्र में यह बात सही है कि युवाओं की बड़ी संख्या है। देश में आबादी का आधे से ज्यादा लगभग 52 फीसदी हिस्सा 31 साल से कम आयु वर्ग का है। भारत के इस जनसंख्या लाभ की चर्चा दुनियाभर में सालों से हो रही है, लेकिन नौकरियां अथवा अवसर नहीं होने से करोड़ों युवा अर्थव्यवस्था का इंजन बनने के बजाए मालगाड़ी के डिब्बों जैसा बोझ बनते जा रहे हैं। आर्थिक शोध अनुसंधान करने वाली प्रियंका के अनुसार बेरोजगारी की समस्या आर्थिक विकास रोक रही है। आज जीवनयापन के लिए हर महीने औसतन 12 से 15 हजार रुपये कमाने वालों की संख्या तेजी से बढ़ रही है। इनमें अधिकतर संविदा मजदूर हैं, जिनमें पढ़े-लिखे युवा भी शामिल हैं। इसके चलते भारत के एक दुष्चक्र में फंसने का खतरा है। अगर रोजगार दर कम होती रही तो आय भी कम होगी। आय कम हुई तो बढ़ती आबादी के लिए नए रोजगार पैदा करने के लिए धन उपलब्ध नहीं होगा। ऐसे ही कारणों से देश का जनसंख्या लाभ एक सुलगती हुई चिंगारी जैसा ही है, जो तेजी से तरक्की की आग में नहीं बदल पा रहा है।

वैश्विक जनसंख्या में 18 फीसदी हिस्सा भारत का

भारत का भौगोलिक क्षेत्रफल दुनिया के कुल क्षेत्रफल का लगभग 2.4 फीसदी है। इस लिहाज से भारत 7 वें नंबर पर है, लेकिन देश की आबादी वैश्विक जनसंख्या की 18 प्रतिशत है। साल 2011 के बाद से भारत में जनगणना नहीं हुई है, इसलिए इस समय भारत की वास्तविक जनसंख्या को लेकर कोई आधिकारिक जानकारी उपलब्ध नहीं है, लेकिन साल 2020 में नेशनल कमीशन ऑन पॉपुलेशन ने जनसंख्या के अनुमानों पर एक रिपोर्ट जारी की थी, इसमें कहा गया था कि अगले 15 सालों में यानी 2035 तक भारत की जनसंख्या 152 करोड़ हो जाएगी। इसका नतीजा यह होगा कि जनसंख्या का घनत्व बढ़कर 465 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर हो जाएगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने साल 2019 में दूसरी बार सत्ता संभालने के बाद 15 अगस्त, 2019 को लाल किले से देश को संबोधित करते हुए तेजी से बढ़ रही जनसंख्या पर चिंता जताते हुए देशवासियों से छोटे परिवार की अपील की थी। उन्होंने कहा था कि छोटा परिवार रखना भी देशभक्ति है। प्रधानमंत्री ने कहा था कि हमारे यहां जो बेतहाशा जनसंख्या विस्फोट हो रहा है, यह आने वाली पीढ़ियों के लिए अनेक संकट पैदा कर सकता है। बच्चे के जन्म से पहले उसकी जरूरत के बारे में जरूर सोचें। शिक्षित वर्ग ऐसा ही करता है।

मोदी सरकार ने लोकसभा चुनाव से पूर्व अंतरिम बजट में जनसंख्या नियंत्रण पर समिति गठित करके इसे देश में सार्वजनिक बहस का मुद्दा बनाने की पहल की है। इस दौरान वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने कहा था कि जनसंख्या वृद्धि और डेमोग्राफिक बदलाव से पैदा होने वाली चुनौतियों से निपटने के लिए बनने वाली कमेटी 'विकसित भारत' के लक्ष्य में जनसंख्या के कारण आ रही चुनौतियों पर सिफारिशें देने का काम करेगी। हालांकि वित्त मंत्री का कहना था कि जब हम जनसांख्यिकीय की बात करते हैं तो यह अवसर और चुनौती दोनों हैं। कमेटी का काम भी अवसर और चुनौती दोनों को पहचानना होगा। हालांकि देश में जनसंख्या नियंत्रण के मुद्दे पर जब भी विमर्श शुरू किया जाता है तो कुछ लोगों की तरफ से ऐसी प्रतिक्रिया मिलती है, जैसे उनका कोई हक छीनने की बात हो रही है या उनके निजी जीवन पर हमला किया जा रहा है। राजनीतिज्ञों के साथ कुछ बुद्धिजीवी वर्ग भी इस मसले पर धार्मिक रंग चढ़ाने से पीछे नहीं रहते हैं। वह यह समझने का प्रयास नहीं करते हैं कि जागरूकता अनियंत्रित जनसंख्या वृद्धि पर लगाम लगाने के लिए पैदा की जानी है। देश में उत्पादित खाद्यान्नों या उपलब्ध संसाधनों के परिप्रेक्ष्य में तीव्र गति से बढ़ती जनसंख्या आर्थिक वृद्धि दर और सामाजिक संतुलन दोनों को प्रभावित करती है। यह सही है कि मानव संसाधन देश के विकास के लिए आवश्यक है और इसमें कमी या वृद्धि से विकास प्रभावित होता है। एक आदर्श स्थिति के लिए इसमें संतुलन आवश्यक है।

भीड़ में मौत कारण और निवारण

कुछ समय पहले दक्षिण कोरिया की राजधानी सियोल में हैलोवीन त्योहार के अवसर पर जुटी एक लाख लोगों की भीड़ में 154 लोगों की भीड़ के कारण मृत्यु हो गई। इसमें अनेक लोगों को कार्डियक अरेस्ट आ गया था। कार्डियक अरेस्ट हृदय के काम करना बंद कर देने को कहते हैं। पूरे संसार में और हमारे देश में भी, समय-समय पर भीड़ में भगदड़ के कारण बड़े स्तर पर मृत्यु होने की घटनाएं होती रही हैं। अभी कुछ दिनों पहले ही हाथरस में भीड़ में भगदड़ से बड़ी संख्या में लोगों को अपनी जान गंवानी पड़ी है। आइए, देखें कि भीड़ के कारण मृत्यु होने के क्या कारण होते हैं और इससे कैसे बचा जा सकता है?

डॉ. राजीव अग्रवाल
तिलहर, शाहजहांपुर

भीड़ का भौतिक शास्त्र

खड़े होने की अवस्था में एक औसत मनुष्य 1 फुट गुणा 2 फुट का एक अंडाकार स्थान घेरता है। प्रति वर्ग मीटर स्थान में 2 लोगों के होने पर उन्हें अपने हाथ-पैर चलाने में अथवा सांस लेने में किसी तरह की कोई परेशानी नहीं होती है। वह अपनी इच्छानुसार और सरलता से यह कार्य कर सकते हैं। प्रति वर्ग मीटर 3 या 4 लोगों का घनत्व होने पर भी कोई विशेष परेशानी नहीं होती है, लेकिन इसके ऊपर बढ़ने पर परेशानियां शुरू हो जाती हैं। प्रति वर्ग मीटर 5 लोगों के खड़े होने पर वह अपनी इच्छानुसार हाथ-पैर नहीं चला सकते हैं। प्रति वर्ग मीटर 6 या 7 लोगों के खड़े होने पर वह आपस में इतने पास-पास हो जाते हैं कि वह एक 'तरल पदार्थ' की तरह काम करने लगते हैं। ऐसी स्थिति में लोग अपने आसपास के लोगों के दबाव के अनुसार काम करने लगते हैं और भीड़ में दबाव में कोई अंतर आने पर पूरी भीड़ में एक 'शॉक वेव' दौड़ सकती है। इस शॉक वेव को भीड़ का भूकंप-क्राउड क्वेक भी कहते हैं। इसमें दबाव की काफी शक्तिशाली तरंगें फैलती हैं, जो व्यक्तियों के शरीर से उनके जूते निकाल सकती हैं अथवा उनके कपड़े फाड़ सकती हैं। भीड़ का दबाव एक हजार पौंड तक का दबाव पैदा कर सकता है, जो स्टील की छड़ों को भी मोड़ सकता है। प्रति वर्ग मीटर 6 अथवा इससे अधिक, लोगों का घनत्व होने पर तीन तरह की घटनाएं हो सकती हैं।

भीड़ के कारण गिरना

लोगों के बहुत अधिक पास-पास होने पर, उन्हें सांस लेने में परेशानी होने लगती है, उनके फेफड़े पूरी तरह फूल नहीं पाते हैं और उन्हें ऑक्सीजन-युक्त ताजी हवा का अभाव हो जाता है। ऑक्सीजन की कमी होने पर उनके मस्तिष्क को पूरी मात्रा में ऑक्सीजन नहीं मिल पाती है और वह बेहोश होकर गिर सकते हैं। इसके अतिरिक्त उनके दिल को भी पूरी ऑक्सीजन नहीं मिल पाती है, जिससे उन्हें दिल का दौरा पड़ सकता है और वह गिर सकते हैं। भीड़ में फैली घबराहट और भीड़ के कारण उत्पन्न गर्मी भी व्यक्ति को बेहोश कर सकती है। ऐसी स्थिति में लोगों के हाथ-पैर और सिर आपस में उलझ सकते हैं और यह स्थिति की गंभीरता को बढ़ा देता है। ऐसे गिरते लोगों की अन्य लोग सहायता भी नहीं कर पाते हैं, क्योंकि वहां हाथ-पैर चलाने या गिरे हुए व्यक्ति को ठीक से लिटाने के लिए स्थान ही नहीं बचता है। ऐसी भीड़ में किसी भी व्यक्ति के किसी भी प्रकार से गिर जाने पर वहां, उसके ऊपर, एक खाली स्थान बन जाता है और उसके शरीर द्वारा अन्य लोगों को मिल रहा सहारा समाप्त हो जाता है। ऐसी स्थिति में अन्य लोगों द्वारा उत्पन्न किया गया दबाव और उस गिरे हुए व्यक्ति के शरीर से लगी ठोकर, उस खाली स्थान पर अन्य लोगों को भी गिरा देती है। अनेक लोग एक के ऊपर एक गिर सकते हैं, यह एक 'चेन रिएक्शन' सी बन जाती है और नीचे वाले लोग ऊपर वाले लोगों के वजन से कुचल सकते हैं और नीचे वाले लोगों को हवा न मिल पाने के कारण भी उनकी मृत्यु हो सकती है। नीचे गिरे हुए लोगों के ऊपर से पीछे से आने वाली भीड़ के गुजर जाने से भी नीचे गिरे लोगों की मृत्यु हो जाती है। सन 2015 में मक्का के 'मीना भगदड़ कांड' में 2400 लोगों की मृत्यु इसी प्रकार हुई थी।

मृत्यु का कारण

भीड़ द्वारा होने वाली मृत्यु में सबसे बड़ा कारण दबाव के कारण दम घुट जाना होता है। लोगों के बेहोश होने के कारण एक दूसरे के ऊपर गिरने से और उनके ऊपर पीछे से आने वाली भीड़ के गुजर जाने से अथवा किसी रुकावट के सामने होने पर पीछे की भीड़ के दबाव से वह कुचल भी सकते हैं और उनकी हड्डियां इत्यादि भी टूट सकती हैं। उन्हें दिल का दौरा (मायोकार्डियल इन्फार्कशन) पड़ सकता है अथवा उनका दिल काम करना बंद कर सकता है।

बचाव कार्य

भीड़ का उचित प्रबंधन ही इसका बचाव हो सकता है। यह भीड़ को नियंत्रित करने वाले लोगों की जिम्मेदारी है कि वह भीड़ द्वारा होने वाली मृत्यु के इन सब कारकों और कारणों को समझें और एक स्थान पर अधिक भीड़ एकत्र न होने दें। वह यह देखें कि भीड़ के रास्ते में आगे किसी तरह की कोई रुकावट तो नहीं है। हम सब लोग भी भीड़ द्वारा इस प्रकार हो सकने वाली मौतों को समझें और भीड़ में जाने से बचें।

भीड़ से हो सकने वाली दुर्घटनाओं को पहले से समझना जरूरी

हमें उन चिह्नों का ज्ञान होना चाहिए, जिनसे हम समझ सकते हैं कि ऐसी कोई दुर्घटना हो सकती है।

- यदि कोई भीड़ आगे बढ़ रही हो, लेकिन वह बढ़ना रुक जाए तो हमें सावधान हो जाना चाहिए कि कोई दुर्घटना हो सकती है।
- यदि हमें कहीं पर भी भीड़ का घनत्व एक सुरक्षित सीमा से अधिक बढ़ता दिखाई पड़े तो हमें शीघ्र से शीघ्र उस स्थान को छोड़ देना चाहिए।
- हम यह देखें कि किसी भीड़ वाले स्थान पर सुरक्षा के उपाय, जैसे - कुशल व्यवस्थापक, सुरक्षाकर्मी, लाउडस्पीकर, संकेतक, अवरोधक आदि का प्रबंध है अथवा नहीं। यदि हमें इनका प्रबंध दिखाई नहीं पड़ रहा हो तो हम उस स्थान पर न जाएं।
- हम भीड़ वाले स्थान पर बच्चों को न ले जाएं। यदि कभी ले भी जाएं तो उन्हें ऊंचाई पर, जैसे अपने कंधों पर-रखें। उनकी ऊंचाई कम होने के कारण उनको कम हवा मिलने और कुचले जाने की बहुत संभावना होती है।

पहले भी हुई हैं घटनाएं

हमारे देश में भीड़ द्वारा मौतों की अनेक गंभीर घटनाएं हुई हैं, जैसे 2008 का जोधपुर हादसा, 2011 का सबरीमाला हादसा, 2022 का वैष्णों देवी हादसा, लखनऊ का साड़ी हादसा, अन्य अनेक घटनाएं और अब यह हाथरस। यह आवश्यक है कि हम भीड़ द्वारा हो सकने वाली ऐसी घटनाओं के कारणों को समझें और यथासंभव अपने आपको उन स्थितियों में पड़ने से बचाएं और यदि हम ऐसी स्थिति में पड़ भी जाएं तो स्वयं एवं अन्य को कम से कम हानि पहुंचने दें।

क्या करें, क्या न करें

लोगों को कार्डियक अरेस्ट होने पर उनका दिल पुन: शुरू करने के लिए अन्य लोगों को उन्हें कार्डियोपल्मोनरी रिससिटेशन देना आना चाहिए। इससे अनेक लोगों की जान बचाई जा सकती है। सियोल वाली घटना में इस प्रकार अनेक लोगों की जान आसपास के लोगों ने बचा ली। वहां एक अकेली महिला ने कम से कम 10 लोगों की जान इस विधि से बचाई थी।

भगदड़ में कुचल जाना

किसी दौड़ती हुई भीड़ द्वारा अन्य लोगों का कुचला जाना बहुत कम होता है। ऐसा जानवरों द्वारा तो हो सकता है, लेकिन ऐसा भी हो सकता है कि किसी अफवाह के कारण घबराकर दौड़ती हुई भीड़ द्वारा कुछ लोग गिर जाएं और अन्य लोगों के पैरों से कुचल कर मर जाएं। इसके अतिरिक्त यह घबराहट कुछ लोगों के गिर जाने और मर जाने से भी उत्पन्न हो सकती है और लोग घबराकर उस स्थान से निकलने के लिए तेजी से भाग सकते हैं और यह बात स्थिति को और बिगाड़ देती है। कभी-कभी यह भी होता है कि किसी व्यक्ति का जमीन पर पड़ा हुआ कोई थैला एक ठोकर के समान कार्य करता है और उससे टकराकर कुछ व्यक्ति गिर जाते हैं। यह देखकर पूरी भीड़ में घबराहट फैल जाती है और वह भीड़ वहां से हटने के लिए तेजी से भागने लगती है। अत: यह बात स्थिति को और बिगाड़ देती है।

भीड़ में फंस जाने पर कुछ बातों का रखें ध्यान

- हम भीड़ की ताकत का विरोध न करें। हम उसके चलने की दिशा के विपरीत जाने का प्रयास न करें। हम ऐसा नहीं कर पाएंगे और गिर जाएंगे। हम भीड़ के साथ चलें, लेकिन कुछ तिरछे चलते हुए उसके किनारे पहुंचने का प्रयास करें। आमतौर पर एक क्राउड क्वेक के धक्के के बाद कुछ क्षण आराम के आते हैं। इन क्षणों में हम तिरछे चलते हुए लोगों के बीच में स्थान ढूंढ़ते हुए भीड़ से बाहर निकलने का प्रयत्न करें। हम सीधे भीड़ को धक्का देकर नहीं निकल पाएंगे।
- हम भीड़ में गिर न जाएं। ऐसा होने पर हम उठ नहीं पाएंगे। हम भीड़ में कोई मोबाइल या अन्य मूल्यवान वस्तु उठाने के लिए न झुकें।
- गिर जाने पर हम अन्य को मदद के लिए न पुकारें। इन स्थानों पर ऑक्सीजन कम होती है और पहले से ही कम ऑक्सीजन से युक्त हमारे फेफड़ों अंतिम ऑक्सीजन भी खर्च कर लेंगे और हम बेहोश हो सकते हैं।
- हम अपनी बांहों को अपने सीने पर बांध लें अथवा हाथों की मुट्ठियों को एक बॉक्सर की तरह सीने के सामने कर लें। हमारी बांहें हमारे शरीर के दोनों तरफ जकड़ न जाएं। इससे हमारे आगे वाले व्यक्ति से हमारी उचित दूरी बनी रहती है, हमारा सीना बचा रहता है और हमें हवा मिलती रहती है। संभव होने पर हमें अपने दोनों पैरों को थोड़ा फैला लेना चाहिए, जिनमें से एक पैर आगे हो और एक पीछे और घुटने थोड़े से मुड़े हुए हों। हाथों और पैरों की इस स्थिति को 'बॉक्सर पोजीशन' कहते हैं।
- हम भीड़ को धक्का न दें। इससे हमारी ऊर्जा व्यर्थ ही खर्च होगी। भीड़ की ताकत के आगे हम उसे धक्का देकर बाहर नहीं निकल सकते हैं।
- यदि संभव हो तो हम किसी ऊंचे स्थान पर चढ़ जाएं और वहां से अन्य लोगों को आगे की स्थिति की सूचना दे दें।
- हम उन स्थानों से दूर रहें, जो बहुत खतरनाक होते हैं। ये स्थान हैं-कोई भी संकुचित स्थान, जैसे-दरवाजा, संकरा गलियारा, कमरा, छोटा हॉल और पुल आदि। हम किसी दीवार या अन्य ठोस चीज के पास रहने से बचें। हम आदमियों और उस ठोस चीज के बीच में दबकर कुचले जा सकते हैं।
- भीड़ की संभावना होने पर हम उससे निकलने का स्थान पहले से देखकर रखें। ये स्थान कोई खिड़की, फायर एस्केप, कोई बाड़ आदि हो सकते हैं। हमें जैसे ही लगे कि भीड़ खतरनाक स्तर तक बढ़ रही है तो हम बिना देर करें वहां से बाहर निकल जाएं।
- भीड़ में गिर जाने पर हम बाईं करवट हो जाएं, जिससे कि हमारा दिल और फेफड़े सुरक्षित रहें या हम किसी भी करवट से एक गेंदनुमा मुड़ी हुई अवस्था में आ जाएं। सीने अथवा पीठ के बल लेटने पर हमारे कुचले जाने की अधिक संभावना होगी। हम अपने सिर को भी अपनी बांहों द्वारा सुरक्षित कर लें। इसे 'फीटस पोजीशन' कहते हैं अर्थात् वह अवस्था, कुछ-कुछ जिस अवस्था में गर्भस्थ शिशु रहता है।

कहानी

कभी तो...

बहुत दिनों से जाने कितना कचरा भरे बैठी थी दिमाग में। आखिर उसे मौका मिल ही गया कचरे से भरे डस्टबिन को खाली करने का। उसने अपने मन की कर ली। वह बोली- "आखिर खुद को समझती क्या है चुड़ैल, जानती नहीं क्या शादी से पहले कितने गुल खिलाए हैं इसने, शादी से पहले ही लिव इन में रह रही थी, आज अपने आप को सती सावित्री जता रही है। सौ चूहे खाकर हज करने चली है ।" सुमिता ने कहा भी-"शकुन चुप हो जा, अपने पारिवारिक उत्सव को खराब नहीं किया करते। नाते रिश्तेदार ही नहीं, मुहल्ले पड़ोस वाले सब हैं यहां, सबके सामने क्यों किसी की इज्जत खराब करने पर तुली है?" "मुझे इससे कोई फर्क नहीं पड़ता, जो जैसी है, मैं बताकर रहूंगी।" शकुन का क्रोध कम नहीं हुआ था, वैसे भी मन की भड़ास निकालने के लिए इससे अधिक उपयुक्त समय और क्या हो सकता था, जब उसके सम्मुख उत्तरदाता कोई था ही नहीं। आखिर कब तक भड़ास निकालती, वह चुप हो गई, किंतु उसके वचन रिश्तेदारों के मस्तिष्क में घर कर गए। वह कयास लगाने लगे कि शकुन ने किसके संबंध में अपनी खीज उतारी है। अवश्य ही कोई निकट संबंधी है, जिसके प्रति इसके मन में इतना जहर भरा है। यदि जहर न भरा होता, तो उगलती ही क्यों? बात आई गई हो गई।

सुधाकर आशावादी
सेवानिवृत्त प्रोफेसर

शकुन संतुष्ट थी,उसे अपने किए पर कोई पछतावा नहीं था। "बहुत दिनों से दिमाग को दही बना रखा था रिया की हरकतों ने, सदैव उसकी बेटियों को नीचा दिखाने की जुगत में रहती थी वह। एक दिन दिव्या अपने बॉय फ्रेंड के साथ हिल स्टेशन क्या चली गई, बखेड़ा खड़ा कर दिया इसने। नौकरी कर रही है, काम के सिलसिले में हिल स्टेशन चली गई तो क्या गलत हो गया? सारी रिश्तेदारी में बता दिया कि दिव्या भी किसी से कम नहीं, निहारिका को भी खूब बदनाम किया था इसने, जाने कैसे-कैसे आरोप लगाए, को-एड. में पढ़ेगी तो दोस्तों के साथ घूमे फिरेगी भी। अरे जब लड़कियां नौकरी करेंगी, तो घर से बाहर रहेंगी ही। मुझे तो अपनी बेटियों पर पूरा भरोसा है, मैंने उन्हें कभी गलत शिक्षा दी ही नहीं। शादी से पहले वे ऐसा कोई काम कर ही नहीं सकती, जिससे मुझे कोई शर्मिंदा कर सके।" स्वयं से ही बात कर रही थी शकुन। बात आगे बढ़नी ही थी, रिया को शकुन के इस एपिसोड का पता चला तो बिफर गई। कहने लगी-"अब जरा हिंदी में समझाऊंगी शकुन मौसी को, यह तो शकुनि से भी अधिक चालाक समझ रही हैं अपने आप को। अपनी बेटियों पर तो कोई अंकुश नहीं, चली हैं दूसरों की बेटियों पर इल्जाम लगाने, जिसके खुद के घर कांच के होते हैं, वे औरों के घरों पर पत्थर नहीं फेंका करते। मेरे बारे में बुरा भला कहेंगी,

मैंने तो जिससे प्यार किया उसी से शादी भी की, अपनी बेटियों को नहीं देखती कि कहां-कहां मुंह मारती फिरती हैं।" मां ने कमान संभाली, रिया को समझाया-"यदि कोई तुम्हारे पीठ पीछे कुछ कह रहा है तो उसकी बातों का बुरा नहीं मानना चाहिए, क्या पता किस बात से नाराज हो गई हो। जरूर तेरी किसी बात पर शकुन को क्रोध आया हो अन्यथा शकुन ऐसी नहीं है।" "मम्मी तुम कभी अपनी बहन की बुराई नहीं सुन सकती, तुम्हें सब पता है, फिर भी तुम उन्हें और उनकी बेटियों को कभी बुरा नहीं कहती।" रिया मां से ही उलझ पड़ी- "तुमने मुझे इस बारे में कभी नहीं बताया, वो तो और ही हैं, जो मेरे सगे हैं, जिन्होंने मुझे बताया कि रिश्तेदारों की भरी भीड़ में वह कैसे मेरे बारे में उल्टा सीधा बोल रही थी।" "बेटी कोई रिश्तेदार किसी का सगा नहीं होता, सब एक दूसरे को लड़वाकर तमाशा देखने वाले होते हैं, तूने भी तो किसी और कि बातों में आकर दिव्या और निहारिका को अपनी दुश्मन बना रखा है। सारे रिश्तेदारी में उनकी छवि खराब कर रखी है, जिसे जब मौका मिलता है, वह उसे भुनाता ही है, तेरी मौसी को उस समय मौका मिल गया, सो रिश्तेदारों के सामने उसने भी खूब भड़ास निकाल ली।" मां ने रिया को समझाने का भरसक प्रयास किया, मगर रिया कब समझने वाली थी। यूं तो रिया, दिव्या और निहारिका के मध्य शीत युद्ध बरसों से चल रहा था, फिर भी आमने-सामने होने पर कभी ऐसी स्थिति कभी उत्पन्न नहीं हुई थी, कि किसी ने भी किसी के प्रति कटुता का परिचय दिया हो। रिया के सामने आते ही शकुन उससे ऐसा व्यवहार करती थी, जैसे कि रिया उसकी अपनी बेटियों से भी अधिक उसकी सगी हो, मगर अपनी बेटियों से तुलना करते हुए शकुन के अंतस में जलन का अग्नि धधक रही थी, कुछ निकट संबंधी उसे शांत नहीं होने देने चाह रहे थे। उधर रिया को भी भड़काने में उन्हीं निकट संबंधियों की विशेष भूमिका थी।

एक लंबे अंतराल तक रिया और शकुन के बीच कोई बात नहीं हुई। इस विवाद में शकुन का अपने अनेक रिश्तेदारों से मोहभंग हो गया वह अनेक संबंधियों से कट चुकी थी। रिया शांत थी। एक दिन शकुन का रिया की मां के पास फोन आया- "दीदी कैसी हो"? "ठीक ही हूं।" रिया की मां ने संक्षिप्त उत्तर दिया। "नाराज हो?" शकुन ने पूछा। "नहीं तो।" पुनः संक्षिप्त उत्तर मिला। "मुझे आपसे क्षमा मांगनी है।" "क्यों?" "अपने अपशब्दों के लिए।" "उससे क्या होगा?" रिया की मां ने कहा। "कुछ तो मैं अपराधबोध से मुक्त हो जाऊंगी।" शकुन ने कहा। "क्या बीता वक्त लौट आएगा?'' शकुन से कुछ कहते न बना, उसने फोन डिस्कनेक्ट कर दिया। उसे लगा कि कुछ पल की बातों ने उसे अपनी बहन से कोसों दूर कर दिया है।

कविता

रंगीन स्मृतियां

एक श्वेत-श्याम तस्वीर है,
मेरे पास
तस्वीर में एक घर अभी भी
बचा है
आंगन और कुआं बचा है
जैसे स्वप्न में बचा है।

तस्वीर में परिवार के लोग हैं
जिनकी उम्र ठहरी हुई है
जैसे घर की उम्र ठहरी हुई है।

तस्वीर में पूर्वज, वैवाहिक बंधन
में बधें
बचे हुए हैं
कुछ पौधे खिले हुए बचे हैं
एक गाय जिसकी पीठ पर
चिड़िया बैठी है
तस्वीर में बचे हुए हैं।

जिस दिन की तस्वीर है
उसकी तारीख का दिन और
महीना धुंधला गया है
तस्वीर के पीछे, वर्ष लिखा बचा
हुआ है।

तस्वीर में पुराने दिन के
बीते पल ठहरे हुए हैं।

श्वेत-श्याम तस्वीर की
मेरे पास, रंगीन स्मृतियां बची
हुई हैं।

सुधीर कुमार सोनी
रायपुर

इश्क

रुकी थी रात चांद भी गहरा था,
कोई मुद्दतों से किसी के इश्क
का मारा
आके उस चमन में ठहरा था।

फलक पर सितारों की चादर
तनी थी,
जमी पर चांदी का पहरा था,
ओस की नर्म बूंद से पत्तियां
भीगी थी
उदासियों ने उसकी,चमन को
घेरा था

महक कामिनी की हवाओं में
फैली थी
गेसुओं ने बिखर के, उसके
चेहरे को घेरा था
हर बूटा ओ गुल उसकी आहों
से तर
अब हर शजर हम नफस था

वहीं उस चमेली के बिरवे तले,
वो रख के कांधों पे सर उसके
रोया था।
लकीरों में उसकी विरह
लिखा था,
आंखों में उसकी दरिया रूका
था,

हवाओं ने कोशिश तो की,
उसके आंसू सुखा दे
मगर चलती रही, दर्द बहता
रहा
जहां में उसके लिए न अब कोई
ठिकाना था।

जो कहते हैं गम और भी हैं
जमाने में
मुहब्बत के सिवा-उन्हें रहा
करे,
मगर उसको, जीते रहने को
अब कोई इशारा न था
दर्द इश्क का गहरा बड़ा था।

मीता गुप्ता
जिला सेवायोजन अधिकारी, हरदोई

क्रूरतम आंधियां

चल रही विष भरी, क्रूरतम
आंधियां।
चदंनी गंध बन कर, बहो
साथियों।
पथ है पथरीला अरु कंटकों
से भरा,
पुष्प के तुल्य खिलकर, रहो
साथियों।।
हो गया आज मानव, का नैतिक
पतन,
स्वार्थ में मत स्वयं को, दहो
साथियों।
झूठ पर सत्य की, जीत होना
है तय,
तुम क्षणिक वेदना तो, सहो
साथियों।।
द्वेष दुर्भाव का, बढ़ गया है
चलन,
स्नेह सद्भाव का, पथ गहो
साथियों। राष्ट्रहित से बड़ा,
दूसरा हित नहीं,
प्राण भी जाएं तो, उफ न हो
साथियों।।
सह लिया है बहुत, जुल्म
अन्याय का और आंतक अब,
मत सहो साथियों।
आस उससे न अब, मित्रता
की करो,
बात दो टूक खुलकर, कहो
साथियों।
चल रही विष भरी, क्रूरतम
आंधियां।
चंदनी गंध बनकर, बहो
साथियों।
पथ है पथरीला अरु कंटको
से भरा,
पुष्प के तुल्य खिलकर, रहो
साथियो।।

राजेन्द्रश्री माली
बरेली

व्यंग्य

ये रिश्ता क्या कहलाता है

हमारे देश में कुछ चीजें इतनी अच्छी हैं कि इनको पेटेंट करा लेने का जी चाहता है। सब्जी और सामान के लिए मोल-भाव करना,कहीं समय पर न पहुंचना, दूसरों के काम में टांग अड़ाना,मिन मांगे सलाह देना आदि।

इसी प्रकार एक जरुरी सेवा है बैंकिंग सेवा। बैंक के खाते तो सबके खुल गए हैं,पर बैंक में काम करने वाले हमारे-आपके जैसे लोग हैं। बैंक भी बहुत प्रकार के हैं। एक श्रेणी तो ऐसी है,जो तेजी में समय को भी मात देती है। आप बस इच्छा कीजिए और बस 'जो इच्छा करिहहु मन माहीं, प्रभु प्रताप कछु दुर्लभ नाहीं' को फॉलो करते हुए चट्ट से आपका काम हो जाएगा। यहां पहुंचकर बस ये कहना है कि एक खाता खोलना है और चुटकियों में काम संपन्न हो जाता है। फोटोग्राफर से लेकर फोटोकॉपी तक की सुविधा इनके सजे-धजे एजेंट के पास होती है। कहीं-कहीं तो सशरीर जाने की आवश्यकता नहीं पड़ती, ये आपके पास आकर आपका खाता खोल देते हैं। खाता ही नहीं खोलते, खाता खुलते ही जितने भी प्रकार के लोन इस दुनिया में अस्तित्व में है,वे सारे के सारे आपके सम्मुख प्लेट में सजाकर प्री अप्रूव्ड टैग के साथ उपस्थित हो जाते हैं। ये अलग बात है कि न्यूनतम बैलेंस से एक चवन्नी भी कम होते ही धड़ाधड़ खाते से फाइन कटने लगता है,जिसका संज्ञान लेने से पहले ही खाता आधा होने की प्रबल संभावना होती है। यहां सुविधा है तो सावधानी भी अपेक्षित है।

दूसरे प्रकार के जो बैंक है वो तेजी अपना तो रहे हैं, कम्प्यूटरीकृत भी हो गए है,पर कार्यप्रणाली अभी कभी सुपरफास्ट तो कभी राजधानी एक्सप्रेस के बीच झूल रही है। यहां काम होता तो है,लेकिन अपनी गति से। एक तीसरी श्रेणी भी है,जहां मस्तराम मस्ती में, आग लगे बस्ती में वाला फार्मूला काम करता है। ये अपने मन के राजा हैं। मन होगा तो सर्वर चलेगा,नहीं होगा तो नहीं चलेगा। इनका सर्वर ही नहीं प्रिंटर भी इच्छाधारी होता है। महीने में किसी-किसी दिन ही सही से काम करता है बाकी दिन यही बताया जाता है, 'भाईसाहब प्रिंटर खराब है, कल आइएगा।' ये कल फिर आता तो है,पर बहुत सारे कल के बाद आता है। इनका विश्वास होता है कि जल्दी का काम शैतान का काम होता है और शैतान क्यों बनना है, इसलिए ठोक-बजाकर काम करते हैं। यहां सिर्फ एक चीज में सभी पंक्चुअल होते है। ये चीज है लंच टाइम। कहीं-कहीं तो प्री लंचटाइम और पोस्ट लंचटाइम का भी अलिखित और अघोषित प्रावधान है। इस श्रेणी के बैंक ग्राहक भी अपनी नियति से समझौता कर चुके होते हैं। हमारे लिए जो काम चुटकियों का होता है,जरूरी नहीं कि उनके लिए भी हो। उनके लिए वह काम दिनों, हफ्तों महीनों का हो सकता है। इसलिए वे जानते है कि बैंक को उनके आने से बहुत कष्ट होता है अतः डेबिट कार्ड, गूगल पे आदि से काम चलाने का प्रयास करते है। कुछ बैंकों को कागज इकट्ठा करने का भी शौक होता है। इनसे किसी भी प्रकार का ऋण लेने के लिए घर, परिवार, कुल, खानदान की जानकारी के साथ कार से लेकर साइकिल तक के कागज देने पड़ते है। यदा-कदा बैंकों में भी देवरानी-जैठानी जैसी कैमिस्ट्री के दर्शन हो जाते है।

डॉ. आकांक्षा दीक्षित
लखनऊ

रंजना जी अपने बेटे के विद्यालय शुल्क को जमा करने के लिए डिमांड ड्राफ्ट बनवाने गईं। उन्होंने बैंक में जाकर काउंटर नंबर एक से फॉर्म लिया और भरकर जमा किया। फिर उन्होंने पूछा कि, "मैडम कितनी देर में बन जाएगा।" काउंटर दो वाली मैडम ने फॉर्म देखा और कहा,"मैं तो कर दूंगी पर कब तक छप के आएगा ये कहना मुश्किल है।" रंजना जी पहली बार ड्राफ्ट बनवाने गई थीं। उनको लगा कि कहीं बाहर से छपता होगा इसलिए पूछ बैठी, "मैडम कहां छपता है, कितनी दूर है, हमें जल्दी है, हम जाकर ले आएंगे।" तब उनको बैंक के चपरासी ने बताया कि वो दो फिट दूर काउंटर चार से छपेगा, दोनों मैडम में छत्तीस का आंकड़ा है,असहयोग आंदोलन चलता रहता है,जिसका खामियाजा ग्राहक उठाते है।" तब जाकर रंजना को समझ आया कि जाकर उनसे भी कहना पड़ेगा तभी काम होगा। अंततः काम तो हो गया।

वैसे कभी-कभी ही सही सेर को सवा सेर भी मिलता है। बैंक वाले ही नहीं कोई-कोई ग्राहक भी बैंक वालों के मजे ले ले लेते हैं। विशंभर चाचा ने अपने बैंक के कर्मचारियों की नाक में दम कर दिया। बैंक से रोज केवाईसी अपडेट करवाने, लोन लेने आदि के लिए फोन आ रहा था। एक दिन वो अपनी बैंक शाखा जा पहुंचे। पहुंचते ही पहले काउंटर पर जाकर बोले, "जरा वू मैडम को बुलाव जो फोन पे दिन रात खून पिए है।" 'वहां मे आई हेल्प यू' डेस्क पर अर्द्धरात्रि में स्वप्नों में खोया प्राणी अचकचा के बोला, "देखिए आप शांति से बात करिए।" "किससे बात करे।" "शांति से बात करिए और नम्रता का ख्याल रखिए।" "तो करवाओं शांति से बात और हम नम्रता का ख्याल काहे रखे, नम्रता अपना ख्याल खुद रखे।" "हमारा मतलब है कि धीरे और आराम से बात कीजिए।" "तो ऐसे कहो न हिंदी में, अंग्रेजी हमें नहीं आती।" "देखिए सर केवाईसी करवाना बहुत जरुरी है। इसीलिए फोन गया होगा।" "केवाईसी है क्या?" ''शार्ट फार्म है ये" "अच्छा मतलब किसका, 'काटो यार चेक' है क्या, काहे काटे?" ''नहीं इसका मतलब ये थोड़े है सर" फिर क्या है? आगे बोलो' "इसका मतलब है। नो योर कस्टमर" "एक तो बिचारा कष्ट से वैसे ही मर रहै है उस पर तुम कह रहे हो कि वो है नहीं। नो का मतलब नहीं ही तो होता है।" "नहीं सर! यहां एन ओ नो नहीं है, यहां के एन ओ डब्ल्यू नो है मतलब जानना, अर्थ हुआ ग्राहक को जाने।" "इसीलिए हमको अंग्रेजी से दिक्कत है, हां पर ये बताओ कि जब खाता खोला था तब नहीं जाना था क्या? बिना जाने खाता खोल दिया।" "जाना था,लेकिन" "तो अब क्या जानना है और क्यों जानना है? शादी-ब्याह में भी इतनी जान-बुझौव्वल नहीं होती जितनी यार तुम कर रहे हो।" ''जरूरी है करना तो पड़ेगा।" "अच्छा मतलब जान के ही रहोगे,लेकिन ये बताओं कि हम भी नेट बैंकिंग सीख रहे हैं, इतने पासवर्ड किसलिए बनवाते हो भाई।" "सुरक्षा के लिए जरूरी है सर।" "माना कि बैंक में सुरक्षा के लिए जरूरी है,लेकिन इतना टिटिम्बा कर दिए हो कि अपना पैसा हम ही नहीं निकाल पा रहे, है हैकर क्या खाक निकालेगा।"

अंततः पूरे बैंक ने एक पैर पर खड़े होकर चाचा का काम करवाया। अब उनका इतना आतंक है कि जैसे ही ब्रांच में प्रवेश करते है मैनेजर साहब सब काम-धाम छोड़कर उनके काम में लग जाते हैं। बैंक वालों पर एक गाना फिट बैठता है कि "आपसे हमारा खास नाता है/ बिना मिले ये दिल घबराता है/ कभी अच्छे हो जाते हो/तो कभी बहुत झिलाते हो/ फिर भी मन तुम्हारे पास /लौट-लौट के आता है/ बिन बैंक काम कहां चल पाता है ये रिश्ता क्या कहलाता है।

समीक्षा

स्वास्थ्य का सुभाषित सिखाती 'स्वास्थ्य सुभाषित'

किसी व्यक्ति का पूर्णरूपेण स्वस्थ रहना उसके शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य तथा सामाजिक मान-प्रतिष्ठा पर निर्भर करता है। भारत में करोड़ों लोग ओबेसिटी, डायबिटीज, हाई ब्लड प्रेशर, हृदयाघात, खांसी और सांस की बीमारी, कैंसर, लकवा जैसी गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं से पीड़ित हैं।

इन सभी स्वास्थ्य स्थितियों के पीछे हमारी अनुचित जीवनशैली एवं खान-पान, व्यायामहीन जीवन, तंबाकू, धूम्रपान, मदिरापान की लत, अनावश्यक आपा-धापी,तनावपूर्ण एवं क्रोधमय जीवन, अपर्याप्त निंद्रा, जीवन में सकारात्मक सोच की कमी और कर्तव्य पालन में अरुचि जैसी स्थितियों का ही हाथ होता है। भारत के नई दिल्ली स्थित यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ मेडिकल साइंसेज के मेडिसिन विभाग के पूर्व आचार्य और विभागाध्यक्ष और फिर जामिया हमदर्द के इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज ऐंड रिसर्च के पूर्व संस्थापक डीन और वर्तमान में दिल्ली के प्रतिष्ठित नेशनल हार्ट इंस्टिट्यूट में वरिष्ठ हृदयरोग विशेषज्ञ डॉ. श्रीधर द्विवेदी विगत लगभग 5 दशकों से जन सामान्य को विविध रोगों एवं स्वास्थ्य समस्याओं के प्रति जागरूकता प्रदान कर रहे हैं। डॉ.श्रीधर द्विवेदी जी द्वारा लिखित 'स्वास्थ्य सुभाषित' शीर्षक की पुस्तक जन सामान्य को पूर्णतया निरोगी रखने के उद्देश्य से स्वास्थ्य के विविध खतरों से बचाने एवं आपा-धापी भरी मौजूदा जीवनशैली में बदलाव लाने की श्रृंखला में एक महत्वपूर्ण कड़ी है। डॉ. द्विवेदी की पुस्तक 'स्वास्थ्य सुभाषित' में प्रस्तुत तरह-तरह की स्वास्थ्य समस्याओं की संक्षिप्त व्याख्या,उनके कारण और उनसे बचने अथवा उन्हें त्याग ने के उद्देश्यों पर आधारित छोटी-छोटी क्षणिकाएं एक बड़ी आबादी विशेषतया नवयुवकों और विद्यार्थियों को एक स्वस्थ जीवनशैली अपनाने को प्रेरित करेंगी। आज अंधा-धुंध विकास क्रम की आपाधापी में मानव ने अपनी दैनिक जीवनशैली को प्रकृति द्वारा निर्धारित नियमों के प्रतिकूल बना दिया है। धूम्रपान और मद्यपान,मांसाहार,जंक फूड के सेवन, शारीरिक निष्क्रियता जैसी तमाम प्रकृति विरोधी गतिविधियों के चलते आज बड़ी संख्या में जनमानस अनायास मोटापा, हृदय रोग, कैंसर आदि जैसी जानलेवा स्वास्थ्य समस्याओं को स्वयं दावत देने लग गया है। 'स्वास्थ्य सुभाषित' में लेखक द्वारा रचित समस्त सुभाषित वैज्ञानिक कसौटियों पर आधारित व्यावहारिक और भारतीय जीवन के लिए सर्वथा अनुकूल और प्रेरक हैं। यह पुस्तक स्वस्थमय जीवनशैली अपनाने को प्रेरित करेगी,जिससे न केवल एक स्वस्थ समुदाय का निर्माण होगा,बल्कि विभिन्न जानलेवा बीमारियों से बचाव सुनिश्चित कर भारत की प्रगति में एक महत्वपूर्ण योगदान होगा।

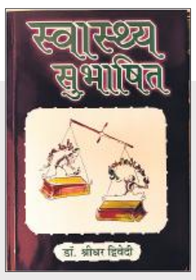

पुस्तक : स्वास्थ्य सुभाषित
लेखक : डॉ. श्रीधर द्विवेदी
मुद्रक : एस.डी.आर. प्रिंटर्स, गाजियाबाद
मूल्य : 250/-रूपये
समीक्षक -डॉ. कृष्णा नन्द पाण्डेय, वरिष्ठ विज्ञान लेखक नोएडा।

किस्सा

जादू-टोना

बात उत्तराखंड के एक छोटे से गांव की है। पति सारी कमाई दारू पर लुटा देता, लिहाजा अब पत्नी ने ठान लिया कि अबके पांचों बच्चों को लेकर वह भी भिलाई चली जाएंगी,जहां पति इस्पात कारखाने में काम करता था। आदिवासी बहुल इलाके भिलाई में जादू-टोना खूब चलता है। एक दिन किसी निर्वस्त्र स्त्री को इस महिला ने कुछ टोटके करते हुए देख लिया तो शरारत वश उसके कपड़े छुपा लिए। वह बिना कपड़ों के ही घर चली गई,मगर जब यह घर पहुंची तो देखा कि उसके छोटे बेटे की गर्दन टेढ़ी हो गई है। अचानक से आई इस बला का डॉक्टरी इलाज क्या हो सकता है? तो इसने अपने ग्राम देवता की भभूत उसके माथे पर मलकर मोर पंख से पूरा शरीर झाड़ दिया। पड़ोसिनों का मानना था कि इस टोटके से बच्चे की गर्दन सीधी हो गई है। अब मोर पंख और भभूत चर्चित हो चला। मोहल्ले में किसी को भी बुखार, सर्दी, खांसी-जुकाम, नजर दोष, किया कराया कुछ भी हो तो उत्तराखंडी मोर पंख जिंदाबाद।

धीरे-धीरे यह मोहल्ले से निकलकर पूरे भिलाई इस्पात कारखाने की कॉलोनियों में फैल गया। अब महिला को पति की तनख्वाह पर निर्भर रहने की जरूरत नहीं थी। आदिवासी लोग अपनी श्रद्धा से काफी कुछ वहां चढ़ा जाते थे। कॉलोनी से फिर कस्बे में और कस्बे से नगर में पहुंचते-पहुंचते मोर पंख को ज्यादा वक्त नहीं लगा। एक समय ऐसा आया कि पूरे मध्य प्रदेश में इसकी धूम मच गई। घर में धन के अकूत भंडार भर गए। सुबह से शाम तलक अब उस महिला का एक ही काम था-पीड़ितों पर मोर पंख झाड़ना और भभूत लगाना। लगभग पंद्रह-बीस वर्षों तक अंधविश्वास का यह अखंड साम्राज्य चलता रहा। फिर पति रिटायर हो गए तो पति के फंड से कहीं अधिक दान दक्षिणा अपनी झोली में भरकर वह घर वापस लौटीं। खूब बड़ा महल जैसा घर बनवाया। मध्य प्रदेश वालों ने यहां भी आना न छोड़ा,मगर आश्चर्य कि उनके अपने गांव वाले कभी भी वहां अपना दुख-दर्द लेकर नहीं गए। कारण उन ग्रामीणों को पता था कि यदि वास्तव में उस महिला के पास कोई सिद्धि होती तो उसके अपने लड़के दारू पी-पी कर बर्बाद नहीं होते।

प्रतिभा नैथानी
लेखिका, देहरादून

एक दिन मोर पंख वाली उस महिला को लकवा पड़ गया। दस वर्ष तक वह बिस्तर पर ही रही। वहीं खाट पर पड़े-पड़े उन्होंने एक पुत्र, एक पुत्री और एक पौत्र का शोक भी मनाया। दूसरे पुत्र ने शराब का व्यसन पूरा करने के लिए घर का सारा कीमती सामान एक-एक करके ठिकाने लगा दिया। अंततः उसी हाल में प्राण निकले,जिस हाल में कभी वह अपना घर छोड़कर भिलाई गई थी। यह बिल्कुल सत्य घटना है। आश्चर्यजनक यह कि अनपढ़ आदिवासियों के साथ-साथ श्रद्धालु और वहां के जनप्रतिनिधी भी शामिल थे।

लघुकथा

बड़ी बहन

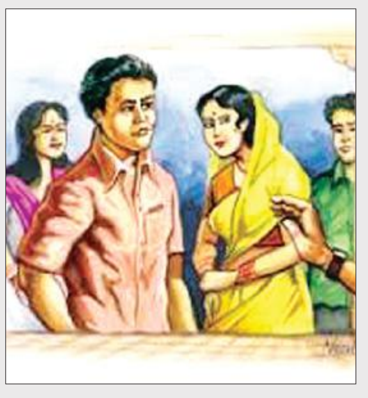

रिटायरमेंट के बाद राम बाबू ने उसी शहर की एक सोसायटी में टू बीएचके का फ्लैट खरीद कर अपने बेटे विशाल और बेटी मीनू के नाम कर दिया था,जिसमें वह अपने बेटे विशाल और बहू माधवी के साथ रहकर हंसी-खुशी अपना जीवन बिता रहे थे। पत्नी को 10 वर्ष पहले कैंसर की जानलेवा बीमारी ने छीन लिया था। एक बेटी मीनू थी,जो कनाडा में अपने डॉक्टर पति के साथ खुश थी।

दो-तीन साल में मीनू एक बार आती तो राम बाबू खुशियों से सराबोर हो जाते थे। बेटा-बहू दोनों ही एक बैंक में नौकरी करते थे। बहु भी अपने पिता समान ससुर का बहुत ख्याल रखती थी। नौकरी में जाने से पहले वह उन्हें नाश्ता कराकर दोपहर का लंच बनाकर फ्रिज में रख देती थी। जिसे गर्म करके राम बाबू खा लेते थे। सुबह उनके जाने के बाद राम बाबू भी अपने दोस्तों से मिलने निकल जाते जो उसी सोसायटी में रहते थे। इसी प्रकार हंसी-खुशी उनका बुढ़ापा बीत रहा था। एक दिन रात में अचानक राम बाबू को दिल का दौरा पड़ा,लेकिन हॉस्पिटल ले जाते समय रास्ते में ही वह चल बसे। पिता की अचानक मौत की खबर से विशाल टूट सा गया।

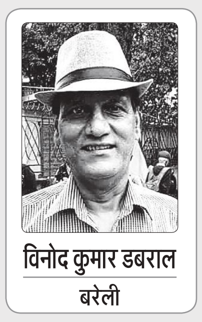

विनोद कुमार डबराल
बरेली

रोते-रोते उसने अपनी बड़ी बहन मीनू को बताया तो वह भी रुआंसी हो गई। किसी तरह से अपने को संभालते हुए बोली, "भय्या! जो होना था,वह तो हो ही गया,सबसे पहले तुम अपने को संभालों और विधि पूर्वक पिताजी का दाह संस्कार संपन्न करो। मैं इतनी जल्दी तो नहीं आ सकती हूं,लेकिन तेरहवीं तक जरूर आ जाऊंगी।" भारी मन से विशाल ने अपने पिता को अंतिम विदाई दी और तेरहवीं की तैयारी में व्यस्त हो गया। बड़ी बहन मीनू भी अपने पति के साथ तेरहवीं से एक दिन पहले ही पहुंच गई थी। सभी नाते रिश्तेदारों की मौजूदगी में राम बाबू की तेरहवीं संपन्न की गई। तेरहवीं के अगले दिन जब सभी रिश्तेदार विदा हो चुके थे तो शाम के समय मीनू अपने भाई विशाल से बोली,''भय्या! तुम्हारे जीजाजी बड़ी मुश्किल से समय निकाल कर यहां आए हैं, हमें परसों ही वापस जाना होगा। तुम किसी अच्छे वकील को जानते हो तो बताओ, जाने से पहले मुझे उससे मिलना जरूरी है।" "वकील! भला तुम्हें वकील से क्या काम पड़ गया?" आशंकित भाव से विशाल चौंकते हुए बोला, क्योंकि वह जानता था कि उसके पापा ने फ्लैट उन दोनों के नाम किया हुआ था। "वह मैं तुम्हें वकील से मिलने के बाद ही बता पाऊंगी।" अगले दिन मीनू अपने पति के साथ वकील से मिलने चली गई। दोपहर बाद जब वह लौटी तो उसके हाथ में एक लिफाफा देखकर विशाल का कलेजा मुंह को आ गया।

वह समझ गया कि उसकी बड़ी बहन अवश्य ही पिता के फ्लैट के बंटवारे के कागज बनवाकर लाई होगी। यदि ऐसा हुआ तो वह सड़क पर आ जाएगा। यह सोचते-सोचते सर्दी के मौसम में भी विशाल का पूरा शरीर पसीने में नहा गया। कांपते स्वर में उसके मुंह से निकला,"यह तुम्हारे हाथ में कैसा लिफाफा है दीदी!" "लो तुम खुद ही देख लो"। कहते-कहते मीनू ने मुस्कराते हुए अपने हाथ का लिफाफा विशाल को थमा दिया। विशाल को काटो तो खून नहीं जैसी हालत हो गई। मरता क्या न करता,कांपते हाथों से उसने लिफाफा खोला और उसके अंदर से स्टांप पेपर निकालकर पढ़ने लगा। ज्यों-ज्यों वह स्टांप पेपर पढ़ता गया,त्यों-त्यों आश्चर्य से उसकी आंखों की पुतलियां खुशी से फैलती चली गईं।

मीनू ने अपने पापा का पूरा फ्लैट अपने छोटे भाई विशाल के नाम करके अपनी दावेदारी को खत्म कर दिया था। अपने अंदर पनप रहे कुविचारों को कोसते हुए रोते-रोते विशाल अपनी बड़ी बहन के पैरों पर गिर पड़ा। मीनू ने तुरंत अपने छोटे भाई विशाल को उठाया और अपने गले से लगाती हुई बोली, "अरे पगले! इसमें पैरों पर गिरने की क्या जरूरत है,यह तो तेरा हक है,जो कानूनी रूप से मैं तुम्हें लौटा रही हूं।" कहते-कहते मीनू की आंखें भी सजल हो गईं।

स्पीति वैली: वज्रयानी बुद्धिज्म की वैली

स्पीति वैली तिब्बत का यह भाग लंबे समय तक पश्चिमी हिमालयी तिब्बती गुंगे साम्राज्य के अधीन था और उसी समय ताबो (दसवां शताब्दी) मठ बना था। 1262 ई. में सम्राट कुबलई खान (मंगोल सेनापति, चंगेज खान का पोता) ने तिब्बत पर कब्जा करके स्पीति पर कब्जा कर लिया। तातार साम्राज्य के पतन के साथ ही स्पीति 17 वीं शताब्दी तक तिब्बत का हिस्सा था। बाद में ग्यालपो जम्या ने लद्दाख पर शासन किया। जब पश्चिम से बाल्टिस ने जम्या को हराया, तो स्पीति और अन्य प्रांतों ने विद्रोह कर दिया और स्वतंत्र हो गए। यही वह समय था जब जम्या के बेटे सिंगे नामग्याल ने बाल्टिस को हराकर स्पीति पर कब्जा कर लिया और स्थानीय सरदार/ राजा प्रभावी रहे।

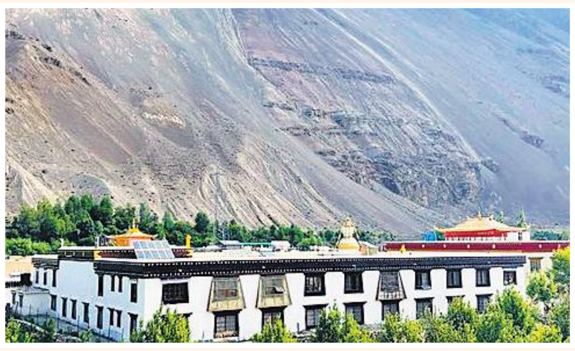

इस बीच डोगरा जनरल जोरावर सिंह (1786-1841) ने लद्दाख, तिब्बत, बल्तिस्तान, स्कर्दू आदि क्षेत्रों को जीता था और तिब्बत के पश्चिमी भाग पर आधिपत्य जमाया। उन्हें 'भारत का नेपोलियन' कहा जाता है। उनका जन्म हिमाचल प्रदेश के कहलुर रियासत (बिलासपुर) में हुआ था।

वर्ष 1846 में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के लेह के तत्कालीन गवर्नर जी. ट्रेबेक ने सोचा कि चांग थांग (लद्दाख) के पश्मीना उत्पादक जिलों के साथ व्यापार को देखते हुए स्पीति को अलग-थलग नहीं रहना चाहिए। इसलिए राजा गुलाब सिंह के साथ अमृतसर की संधि के तहत स्पीति ब्रिटिश साम्राज्य और इस तरह भारत का हिस्सा बन गया। 5,341 वर्ग मील के क्षेत्र में फैले लाहौल और स्पीति की यात्रा आज भी कठिन पर बहुत ही रोमांचक और रहस्यमयी है। ताबो काजा के बाद दूसरा बड़ा कस्बा है। किन्नर धर्म लोक के लेखक बुद्ध धर्म से प्रभावित कृष्णनाथ जी जब 1976 में ताबो आए थे तो यहां की जनसंख्या 180 बताई थी, आज 1000 के लगभग है, जबकि रास्ते बन गए हैं। साफ है जब मानेस्ट्री एक हजार साल पहले बनी होगी तो यह स्थान बस लामाओं का, बुद्धिज्म पढ़ने वालो का, पास ही बनी गुफाओं में रह रहे साधकों का रहा होगा।

शैलेन्द्र प्रताप सिंह
से.नि., पुलिस महानिरीक्षक

जब ताबो की जनसंख्या का यह हाल है तो आप सोच सकते हैं कि इस वैली में सौ साल पहले कितनी जनसंख्या रही होगी जब आवागमन के साधन नहीं थे, सड़कें नहीं थी, चारो ओर बैरन पहाड़ थे, जीविका के साधन नहीं थे, तब कोई क्यों यहां आता होगा।

मुझे रास्ते में पर्यटकों के दल आगे-पीछे चलते मिले थे, उनमें से दो मठ में मिले। उन्होंने बताया कि लद्दाख और स्पीती की सुंदरता अलग-अलग है, पर स्पीती ज्यादा सुंदर लगा। मेरा भी यही मत है। मठ की पूर्व दिशा की मिट्टी/बालू की पहाड़ियों पर साधना की पुरानी गुफाएं दिखीं। इजिप्ट में मैंने ऐसी गुफाएं देखी थीं, पर वहां जिंदगी के बाद के लिए सुविधाओं से युक्त ये राजाओं/ फेरोन द्वारा बनाई गई थी, यहां इसी जीवन में वज्रयानी साधना के लिए।

फिर हम वर्ष 996 में स्थापित ताबो मठ गए। वहां से पुराने मंदिर गए, शाम लाइट कम थी। मिट्टी की दीवारों पर बने भित्ति चित्रों ने, पुराने और गुरुओं की मूर्तियों ने मन मोह लिया।

कितना पुराना मठ, जहां दीपांकर आतिश जैसे गुरु आए हैं। चारों ओर पहाड़ों से घिरा मठ। पास ही उत्तर पूर्व की पहाड़ियों के पार तिब्बत है। पता चला चोरी-छिपे लोग यहां से सीमा के पार जाते हैं। पशम, ऊन, पोला लाते हैं। पीढ़ियों से वे तिब्बत जाते-आते रहे हैं। वहां से व्यापार का इतिहास है। उनके मन में कहीं न कहीं इतिहास जोर मानता होगा पर तिब्बत दुर्दिन में है। स्वाधीन नहीं, पराधीन है। अंतर्राष्ट्रीय सीमा यहां से लगभग फ्लाइट से बस 5 किलोमीटर दूर होगी।

गोनपा की मिट्टी की चौहदों है। मिट्टी के स्तूप है। भोट भाषा में सोयतेन कहते हैं। बीच में मुख्य गोल्पा है। बाहर दूर पहाड़ों से आती हवाएं जैसे झपट्टा मारती हैं। पता चला अगस्त 1965 में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के महानिदेशक देशपांडे ने स्पीति घाटी की खोज-यात्रा की थी। इस खोज का प्रयोजन ताबो गोनपा का और उनके चित्रों का पुरातत्व और कला की दृष्टि से मूल्यांकन रहा। मनाली से रटांग ला-खोकसर-कुंजम ला-काजा-की होकर खच्चरों पर 'सर्वे' की यह टोली ताबो पहुंची थी। राह कठिन थी। ज्ञान की पिपासा ही इस राह पर उन्हें ले आई होगी। इस यात्रा का वृत्तांत इंडियन आर्कियोलॉजी : ए रिव्यू (1965-66), आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ दृष्टि या नई दिल्ली, पृष्ठ 36-37 में इस प्रकार दिया गया है।

ताबो गोनपा काजा से लगभग दस मील दूर है (स्पीति) नदी के अनुप्रवाह, बहाव के साथ नीचे, जाते हैं। ताबो को निश्चय हो हिमालय की अजंता कहा जा सकता है। यहां के चित्रों की रंग योजना, संयोजन और रेखांकन अजंता की परंपरा का स्मरण दिलाते हैं। ग्रह की गोनपा की तरह वहीं है। यह स्पीति घाटी के समतल मैदान में स्थित है। इसके चारों ओर खासी ऊंची पत्थर और मिट्टों की चहारदीवारी है। विहार संकुल मिट्टी और सुखाई हुई कच्ची ईंटों का चित्र लिखित ढांचे सरीखा है। इस पवित्र संकुल ने काल को जैसे जीत लिया है। इनमें सबसे प्राचीन और सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण चित्र ग्यारहवीं-बारहवीं शताब्दी के हैं। ये गोन खंड गोनपा में हैं, जो सबमें प्रमुख हैं।

तिब्बत में हिंदुस्तानी बुद्धिज्म

लद्दाख की तरह ही स्पीति वैली वज्रयानी बुद्धिज्म की वैली है। यहां यह जानना जरूरी है तिब्बत में हिंदुस्तानी बुद्धिज्म कैसे बहुत आगे बढ़ गया। वज्रायानी/तांत्रिक वज्रयान को आगे बढ़ाने में आठवीं शताब्दी के तिब्बती राजा स्रोंग डेटसन (790–844 ई.) का विशेष योगदान है, जिन्होंने नालंदा के मठाधीश शांतिरक्षित, गुरु रिनपोचे आचार्य पद्मसम्भव, जो नालंदा विवि में ही रहते थे और विमलकीर्ति जैसे करीब 108 बौद्ध लामाओं को तिब्बत बुलवाया और उनसे वहां वज्रयान का प्रचार करवाया। गुरु पद्मसंभव ने तिब्बत में बौद्ध विहार (799 ई.) की स्थापना की, जिसके पहले आचार्य शांतिरक्षित जी हुए। पद्मसंभव के शिष्यों ने निइंगपा संप्रदाय (निंगमा स्कूल) की स्थापना की। गुरु पद्मसंभव उडियोन क्षेत्र (स्वात वैली कश्मीर) के रहने वाले थे और शांतिरक्षित की बहन मान्दर्वा उनकी आध्यात्मिक पत्नी के रूप में थीं। गुरु पद्मसंभव तांत्रिक लामा धर्म में द्वितीय बुद्ध के रूप में ही स्वीकार किए जाते हैं। तिब्बत में उन्होंने दोनों धर्मों बौद्ध और बोन–पा (तिब्बत का स्थानीय धर्म) में समन्वय बनाते हुए सभी आसुरी शक्तियों को परास्त किया। पद्मसंभव के अनुसार संसार भ्रांति है, माया है और सत्य है बस अद्वैत मन। पद्मसंभव ने बोधि प्राप्ति हेतु बोधि चित्त को ऊर्ध्वगामी करना आवश्यक बताया। इस योग के लिए पद्मसंभव ने बताया कि मंत्रों का प्रयोग करते हुए साधक अपने एक आराध्य देव (इष्ट देव) का मानसिक चित्र बनाएं, इष्टदेव (तिब्बती शब्द ईडम) का ध्यान करें जब तक कि साधक का मन और इष्टदेव एक हो जाते हैं, जब उनका कोई अलग अस्तित्व नहीं रहता।

तांत्रिक बौद्ध धर्म के सबसे प्रभावशाली स्कूल के रूप में आज कग्यूपा स्कूल है। कग्यूपा संप्रदाय के ही करमापा (संप्रदाय के प्रधान) की तिब्बत व सिक्किम में बहुत मान्यता है। कग्यूपा स्कूल की स्थापना 11 वीं शताब्दी के लामा मारपा द्वारा की गई थी, जिन्होंने तिलोपा के शिष्य नारोपा से भारत जाकर शिक्षा प्राप्त की थी।

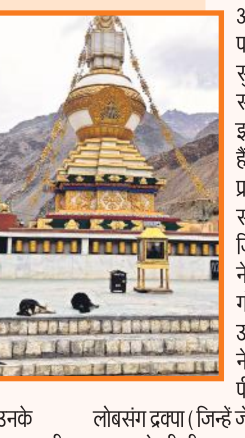

तिलोपा का जन्म 950 या 988 ई. में हुआ था। इनके शिष्यों में नारोपा और नारोपा के शिष्यों के रूप में शांतिपा, मारपा, दीपंकर आतिश और कनिष्ठ डोम्बी को माना जाता है। पश्चिमी हिमालयी तिब्बती गुगे साम्राज्य के राजा येशे–ओ की ओर से 108 बौद्ध मठों की स्थापना कराई गई थी, जिसमें ताबो मठ भी है। 996 ई. में की गई थी। बताया गया कि उस समय यहां नालंदा तक्षशिला तरह बुद्धिस्ट लाइब्रेरी भी थी और यहां दीपंकर आतिश भी आए थे। उल्लेखनीय है कि राजा येशे–ओ के आमंत्रण पर वर्ष 1038 ई. में विक्रमशिला बौद्ध कालेज के प्रधानाचार्य दीपंकर आतिश (तिब्बती टाइटिल) तिब्बत भेजे गए थे। बौद्ध देवी तारा उनके जीवनभर उनकी पथ प्रदर्शिका रहीं। लामा आतिश ने वज्रयान की गरिमा में बहुत बृद्धि की। बौद्ध धर्म के प्रचार–प्रसार के लिए तमाम किताबें लिखीं या उनके अनुवाद किए। कालचक्रयान का प्रचार तिब्बत में आतिश ने किया। यह बौद्ध धर्म का ईश्वरवादी स्वरूप है। इसे महायानी विचारधारा का स्वाभाविक विकास माना गया। इसमें पंचध्यानी बुद्धों को भी एक आदिम बुद्ध के अवतार के रूप में कल्पित किया गया। यह काल या नाश के चक्र से रक्षा करने वाला मार्ग है।

आतिश के प्रमुख शिष्य ब्रमटन ने कदम–पा स्कूल की स्थापना की जो बाद में एक सुधरे और परिवर्तित रूप में गे–लुग–पा स्कूल के रूप में प्रसिद्ध हुआ। दलाई लामा इसी संप्रदाय के चौदहवें प्रधान लामा हैं। आधुनिक तिब्बती बौद्ध धर्म में चार प्रमुख संप्रदाय हैं : 1) न्यिंगमापा, जिसकी स्थापना पद्मसंभव ने की थी, 2) काग्यूपा, जिसकी स्थापना तिलोपा (988–1069) ने की थी, 3) साक्यपा, जिसकी स्थापना गोनचोक ग्यालपो (1034–1102) और उनके पुत्र गुंगा न्यिंगपो (1092–1158) ने की थी, 4) गेलुगपा (पुण्य संप्रदाय, पीली टोपी) जिसकी स्थापना त्सोंग खापा लोबसंग द्रक्पा (जिन्हें जे रिनपोछे भी कहा जाता है) (1357 – 1419) ने की थी। आजकल इसके प्रमुख दलाई लामा है। ताबो मठ गेलूपा संप्रदाय की है। दलाई लामा ने किसी इंटरव्यू में कहा है कि वह अंतिम समय ताबो मठ में रहना पसंद करेंगे।

क्या हैं एलर्जी के लक्षण और बचाव

एलर्जी तब होती है जब हमारी प्रतिरक्षा प्रणाली एलर्जेन नामक किसी चीज पर अत्यधिक प्रतिक्रिया करती है।

डॉ अंशुमाली श्रीवास्तव
विभाग अध्यक्ष छाती एवं टीबी रोग, वरुण अर्जुन मेडिकल कॉलेज, शाहजहांपुर

एलर्जन एक ऐसा पदार्थ है, जो एलर्जी की प्रतिक्रिया को ट्रिगर करता है और ज्यादातर लोगों के लिए हानिकारक नहीं होता है, जैसे पराग या पालतू जानवरों की रूसी (फर या पंख वाले जानवरों की त्वचा की कोशिकाएं), लेकिन जब आपको एलर्जी होती है तो आपकी प्रतिरक्षा प्रणाली इसे रोगाणु या वायरस की तरह ही दूर भगाने की कोशिश करती है। जब ऐसा होता है तो आपका शरीर एलर्जेन से लड़ने के लिए एंटीबॉडी नामक प्रोटीन बनाता है। इससे छींकने, खुजली, पित्ती और सांस लेने में तकलीफ जैसे लक्षण दिखाई देते हैं। ये लक्षण आमतौर पर हल्के होते हैं, लेकिन एलर्जी कभी–कभी एनाफिलैक्सिस नामक गंभीर प्रतिक्रिया पैदा कर सकती है, जो संभावित रूप से जीवन के लिए खतरा है।

एलर्जी का मौसम- कई जगहों पर एलर्जी के दो मौसम होते हैं : वसंत और पतझड़। हर साल एक ही समय पर होने वाली एलर्जी (मौसमी एलर्जी) आमतौर पर पेड़ों, घासों और खरपतवारों से निकलने वाले पराग के कारण होती है। ज्यादातर पेड़ वसंत में पराग छोड़ते हैं, उसके बाद वसंत के अंत और गर्मियों की शुरुआत में घास छोड़ते हैं और गर्मियों के अंत और पतझड़ की शुरुआत में खरपतवार छोड़ते हैं। कभी–कभी, मौसमी एलर्जी ओवरलैप होती है, खासकर जब पेड़ अपने पराग को जल्दी छोड़ते हैं या जब बरसात के मौसम में अधिक पौधे और फफूंद उगते हैं। इसलिए साल में एक लंबा एलर्जी सीजन हो सकता है, यह इस बात पर निर्भर करता है कि आप कहां रहते हैं, आपके आसपास कौन से पौधे उगते हैं और आपकी एलर्जी किस वजह से होती है?

एलर्जी के लक्षण

चाहे आपको किसी भी चीज से एलर्जी हो, लक्षण एक जैसे हो सकते हैं। त्वचा एलर्जी के सामान्य लक्षणों में शामिल हैं: खरोंच, खुजली, लालपन, सूजन, फटी त्वचा। पशुओं से होने वाली एलर्जी के कारण निम्न लक्षण उत्पन्न होते हैं- बहती या भरी हुई नाक, नाक बंद होने के कारण चेहरे में दर्द, छींक आना, पानी भरी, लाल और खुजली वाली आंखें, खांसी, सीने में जकड़न, सांस लेने में तकलीफ और घरघराहट, त्वचा पर दाने या पित्ती।

कॉकरोच एलर्जी के लक्षणों में शामिल हैं-खांसी या घरघराहट, बंद नाक, साइनस का इंफेक्शन, कान में इंफेक्शन, त्वचा के लाल चकत्ते। किसी कीड़े के डंक से एलर्जी होने के लक्षण इस प्रकार हैं: डंक वाले स्थान के अलावा अन्य स्थानों पर पित्ती, खुजली और सूजन, पेट में ऐंठन, उल्टी या गंभीर मतली या दस्त, छाती में जकड़न या सांस लेने में परेशानी, जीभ या गले में सूजन या निगलने में कठिनाई, धूल एलर्जी के लक्षणों में शामिल हैं: छींक आना, बहती या भरी हुई नाक, लाल, खुजलीदार और पानी भरी आंखें, त्वचा में खुजली, घरघराहट, खांसी, सांस लेने में तकलीफ खाद्य एलर्जी के लक्षण ये लक्षण आपके शरीर के किसी भी हिस्से को प्रभावित कर सकते हैं, जिसमें आपकी त्वचा, पाचन तंत्र, हृदय, रक्त वाहिकाएं या फेफड़े शामिल हैं। आपको निम्न में से एक या अधिक लक्षण हो सकते हैं: उल्टी, पेट में ऐंठन, हीव्स, सांस लेने में कठिनाई, घरघराहट, बार-बार खांसी आना, गला खराब होना, निगलने में परेशानी, जीभ की सूजन (बोलने या सांस लेने की क्षमता पर असर), पीली या नीली रंग की त्वचा, चक्कर आना या बेहोशी महसूस होना कमजोर नाड़ी, सदमे के लक्षण, जैसे दिल की धड़कन तेज होना या बेचैनी होना, एनाफाइलैक्सिस, जिसके लक्षणों में दाने, उल्टी, सांस लेने में परेशानी और चक्कर आना शामिल हो सकते हैं।

ज्यादातर खाद्य एलर्जी के लक्षण खाने के दो घंटे के भीतर दिखाई देते हैं और कभी-कभी कुछ ही मिनटों में शुरू हो जाते हैं। दुर्लभ मामलों में लक्षण 4-6 घंटे के बाद शुरू हो सकते हैं, आमतौर पर उन बच्चों में जिन्हें एक्जिमा एक लक्षण के रूप में होता है। एक बहुत ही गंभीर खाद्य एलर्जी को खाद्य प्रोटीन प्रेरित एंटरोकोलाइटिस सिंड्रोम कहा जाता है। यह दुर्लभ है और यह ज्यादातर उन शिशुओं में होता है, जो पहली बार गाय का दूध, सोया या कुछ अनाज खाते हैं। 2-6 घंटों के भीतर, उन्हें बार-बार उल्टी और कभी-कभी खूनी दस्त हो सकते हैं। बच्चे जल्दी ही निर्जलित हो सकते हैं, इसलिए यह एक आपातकालीन स्थिति है। उन्हें तरल पदार्थ और अन्य दवाओं के लिए इआर में जाने की आवश्यकता है। दवा एलर्जी के लक्षण दवा की प्रतिक्रिया आपके शरीर के किसी भी हिस्से में हो सकती है। आप दवा को कई बार ले सकते हैं और आपको कोई प्रतिक्रिया नहीं होगी। लक्षणों में शामिल हैं: त्वचा पर दाने या पित्ती, खुजली, घरघराहट या सांस लेने में समस्या, सूजन, उल्टी करना, चक्कर आना या सिर हल्का महसूस होना।

एलर्जी परीक्षण

त्वचा परीक्षण : एलर्जी का पता लगाने का सबसे आम तरीका त्वचा परीक्षण है। ऐसा इसलिए है, क्योंकि यह सबसे तेज और सबसे सटीक परिणाम देता है।

रक्त परीक्षण : यदि आप कोई ऐसी दवा लेते हैं, जो एलर्जी परीक्षण के परिणामों को प्रभावित कर सकती है, आपकी त्वचा संवेदनशील है या त्वचा परीक्षण से आपको कोई प्रतिकूल प्रतिक्रिया हुई है, तो आपका डॉक्टर इसके बजाय रक्त परीक्षण कर सकता है। रक्त परीक्षण का उपयोग करके बच्चों का भी परीक्षण कर सकते हैं।

एलर्जी उपचार

इम्यूनोथेरेपी, स्टेरॉयड, एंटीहिस्टामाइन्स, मास्ट सेल स्टेबलाइजर्स, ल्यूकोट्रिएन संशोधक, एंटीकोलिनर्जिक नेज़ल स्प्रे, बायोलॉजिक्स, आपातकालीन एपिनेफ्रीन शॉट।

साप्ताहिक राशिफल

-पं. मनोज कुमार द्विवेदी
ज्योतिषाचार्य, कानपुर

मेष — इस सप्ताह आपको अपने करियर–कारोबार को आगे बढ़ाने के लिए अच्छे अवसर प्राप्त होंगे, लेकिन इन अवसरों को भुनाने के लिए आपको अपने समय और अपनी ऊर्जा का प्रबंधन करने के साथ अभिमान और आलस्य से बचने की आवश्यकता रहेगी।

वृष — यह सप्ताह शुभता और सौभाग्य को लिए हुए है। इस सप्ताह आपको किसी कार्य विशेष में बड़ी सफलता मिलने के योग बनेंगे। पूरे सप्ताह आपको अपने इष्टमित्रों, वरिष्ठ जनों और परिजनों का सहयोग और समर्थन हासिल रहेगा। ऐसे में आप अपने सोचे हुए काम को सही समय में करने में पूरी तरह से काम करेंगे।

मिथुन — इस सप्ताह अधूरे काम पूरे होंगे। व्यक्ति विशेष की मदद से बीते लंबे समय से चली आ रही किसी बड़ी समस्या का समाधान होगा। आर्थिक समस्याएं धीरे–धीरे दूर होती नजर आएंगी। आपको सौभाग्य का सहयोग धीरे–धीरे ही सही, लेकिन मिलता हुआ दिखाई देगा। पारिवारिक सुख की दृष्टि से समय मध्यम फलकारी है।

कर्क — यह सप्ताह मिलाजुला साबित होने वाला है। इस सप्ताह परीक्षा–प्रतियोगिता की तैयारी में जुटे छात्रों का मन पढ़ाई से उचट सकता है। यदि आप व्यवसाय से जुड़े हैं तो आपको धन का लेनदेन बेहद सावधानी के साथ करने की आवश्यकता रहेगी अन्यथा आपको जरा सी लापरवाही के चलते बड़ा आर्थिक नुकसान झेलना पड़ सकता है।

सिंह — इस सप्ताह किसी भी कार्य को जल्दबाजी या असमंजस की स्थिति में करने से बचना चाहिए अन्यथा आपको नुकसान झेलना पड़ सकता है। कार्यक्षेत्र से जुड़ी मुश्किलें हो या फिर घर–परिवार से जुड़ी कोई परेशानी उसका हल निकालते समय आपको दिल के साथ दिमाग का भी प्रयोग करना होगा।

कन्या — इस सप्ताह अपनी सेहत और संबंध दोनों का खूब ख्याल रखने की आवश्यकता रहेगी। सप्ताह की शुरुआत में आप मौसमी बीमारी के चलते शारीरिक एवं मानसिक रूप से परेशान रह सकते हैं। इस दौरान घर–गृहस्थी से जुड़ी कोई बड़ी परेशानी भी आपकी चिंता का बड़ा कारण बन सकती है।

तुला — यह सप्ताह बीते सप्ताह के मुकाबले ज्यादा बेहतर और ज्यादा लाभप्रद साबित होगा। इस सप्ताह आप जिस काम में हाथ लगाएंगे और उसमें फायदा और सफलता प्राप्त होती नजर आएगी। नौकरीपेशा लोगों पर उनके बॉस पूरी तरह से मेहरबान रहेंगे।

वृश्चिक — इस सप्ताह करियर–कारोबार अथवा निजी कार्यों के लिए यात्रा करनी पड़ सकती है। यात्रा सुखद, लाभप्रद एवं नए संपर्कों को बढ़ाने वाली साबित होगी। यात्रा के दौरान आपकी किसी प्रभावी व्यक्ति से मुलाकात संभव है, जिसकी मदद से भविष्य में लाभदायक योजना से जुड़ने का अवसर प्राप्त होगा।

धनु — यह सप्ताह अत्यंत ही शुभ और लाभप्रद साबित होने वाला है। आप अपने कार्यक्षेत्र में खूब मेहनत करते हुए खुशियां और मनचाही सफलता प्राप्त करेंगे। कार्यक्षेत्र में आपके परिश्रम और प्रयास की सीनियर तारीफ करेंगे। कामकाजी महिलाओं का न सिर्फ कार्यक्षेत्र में, बल्कि घर के भीतर मान–सम्मान बढ़ेगा।

मकर — इस सप्ताह अपनी ऊर्जा और समय का प्रबंधन करके चलते हैं तो न सिर्फ आपके सोचे हुए कार्य समय पर पूरे होंगे, बल्कि उन्हें उम्मीद से ज्यादा लाभ की प्राप्ति भी हो सकती है। यह सप्ताह परीक्षा–प्रतियोगिता की तैयारी में जुटे छात्रों के लिए बेहद शुभ रहने वाला है।

कुंभ — इस सप्ताह अपने घर–परिवार की खुशियों और कार्यक्षेत्र में तमाम तरह की उपलब्धियों के खूब सपने संजोएंगे, लेकिन उनमें से कुछ पूरे होते हुए तो कुछेक में बाधाएं आती हुई नजर आएंगी। सुखमय जीवन जीने के लिए पारिवारिक कलह से बचना चाहिए।

मीन — यह सप्ताह मानसिक उलझनों को लिए रह सकता है। सप्ताह की शुरुआत में कामकाज में आने वाली अड़चनों को लेकर आपका मन थोड़ा खिन्न रह सकता है। इस दौरान आपको अपने सीनियर और जूनियर से कम सहयोग मिल पाएगा। स्वास्थ्य की दृष्टि से समय कुछ विपरीत फल प्रदान करने वाला बना हुआ है।

वर्ग पहेली (काकुरो)

काकुरो पहेली वर्ग पहेली के समान हैं, लेकिन अक्षरों के बजाय बोर्ड अंकों (1 से 9 तक) से भरा है। निर्दिष्ट संख्याओं के योग के लिए बोर्ड के वर्गों को इन अंकों से भरना होगा। आपको दी गई राशि प्राप्त करने के लिए एक ही अंक का एक से अधिक बार उपयोग करने की अनुमति नहीं है। प्रत्येक काकुरो पहेली का एक अनूठा समाधान है।

काकुरो 90

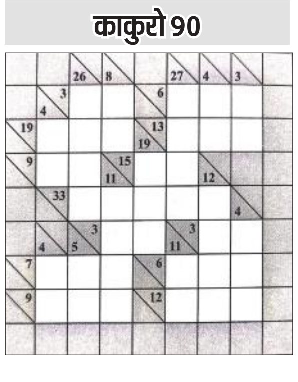

काकुरो 89 का हल

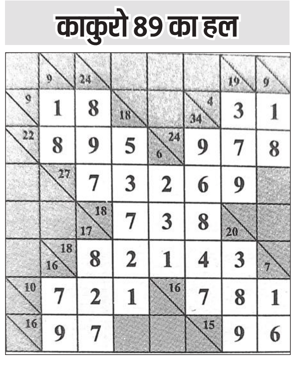

खाना खजाना

भाटिया कढ़ी

जैसा इसका नाम है, यह कढ़ी भाटिया समाज का मूल है। यह एक मीठा–खट्टा विकल्प है, जिसे तुअर दाल के पानी, दही और सब्जियों से बनाया जाता है। सामग्री का यह मजेदार मेल इसे स्वाद और खुशबु के मामले में भिन्न बनाता है। आप इस व्यंजन में स्लाइस्ड आलू भी मिला सकते हैं।

सामग्री

- 1 कप तुअर दाल
- 1/4 कप दही
- 1 टेबल स्पून बेसन
- 2 टेबल–स्पून तेल
- 1 टी स्पून जीरा
- 1/2 टी स्पून सरसों
- 1/4 टी स्पून हींग
- 1/2 टी स्पून मेथी दानें
- 1 कप भिंडी, 50 मिमी (2) के टुकड़ों में कटी हुई
- 1/4 कप स्लाइस्ड मूली
- 1 1/2 कप सहजन फल्ली, 50 मिमी (2) के टुकड़ों में कटी हुई
- 4 कोकम, 10 मिनट के लिए भिगोकर छाने हुए
- 4 टेबल स्पून कटा हुआ गुड़
- नमक स्वादानुसार
- 1/2 कप मोटे स्लाइस्ड केले
- सजाने के लिए, 2 टेबल स्पून बारीक कटा हुआ हरा धनिया

बनाने की विधि

तुअर दाल और 5 कप पानी को एक प्रेशर कुकर में मिलाकर, दो सीटी तक प्रेशर कुक कर लें। फिर ढक्कन खोलने से पहले सारी भाप निकलने दें। हल्का ठंडा कर, दाल छान लें और पानी को एक तरफ रख दें।

इस व्यंजन के लिए आपको केवल पानी की आवश्यकता है। दही और बेसन को एक बाउल में अच्छी तरह फेंट लें। एक तरफ रख दें। एक गहरे नॉन–स्टिक पैन में तेल गरम करें और जीरा, सरसों, हींग और मेथी दानें डालें। जब सरसों के बीज चटकने लगे तब भिंडी, मूली, सहजन फली और छाना हुआ दाल का पानी डालकर अच्छी तरह मिला लें। ढक्कन से ढककर, धीमी आंच पर 8–10 मिनट के लिए या सब्जियों के नरम होने तक, बीच–बीच में हिलाते हुए पका लें। कोकम, गुड़, तैयार दही–बेसन का मिश्रण और नमक डालकर अच्छी तरह मिला लें और लगातार हिलाते हुए, धीमी आंच पर 4 से 5 मिनट के लिए पका लें। केले डालकर अच्छी तरह मिला लें और धीमी आंच पर 2 मिनट के लिए और पका लें। अब धनिया से इसे सजाकर गरमा–गरम परोसें।

मनीष कुमार सोलंकी
फूड ब्लॉगर

दिलचस्प कहानी से अन्याय करती फिल्म

महाराज फिल्म 1862 में हुए महाराज लिबेल केस पर आधारित है। कुछ लोग इसका विरोध कर रहे हैं, पर ये एक सत्य घटना है इसलिए सत्य से मुंह फेरने का कोई फायदा नहीं है और सत्य से मुंह फेरना भी नहीं चाहिए। हम अपनी कमियों को स्वीकार करेंगे तभी इन्हें सुधार सकेंगे। इस केस पर सौरभ शाह द्वारा गुजराती भाषा में इसी नाम से एक नॉवेल भी लिखी जा चुकी है और पूरी फिल्म इसी पर आधारित है। मुझे हैरानी है कि जब नॉवेल प्रकाशित हुई थी, तब तो किसी ने विरोध नहीं किया था और अब फिल्म बनी है तो इतना विरोध क्यों?

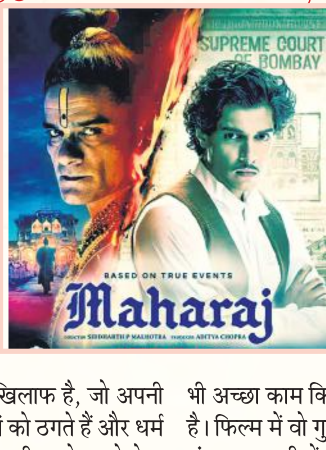

वैसे इस फिल्म में विरोध करने लायक कुछ भी नहीं है। न ही इस फिल्म में हिंदू धर्म का अपमान किया गया है और न ही भगवान का। फिल्म में बस पाखंडी और ढोंगी बाबाओं की सच्चाई दिखाई गई है। ये फिल्म धर्म के खिलाफ नहीं धर्म के ठेकेदारों के खिलाफ है, जो अपनी सहूलियत के हिसाब से धर्म के नाम पे लोगों को ठगते हैं और धर्म को बदनाम करते हैं। अब कुछ लोग कहेंगे की इतने पुराने केस पर फिल्म क्यू बनाई गई? अब फिल्म बनाने की क्या जरूरत थी? क्योंकि आज भी ये ढोंगी बाबाओं का ढोंग खत्म नहीं हुआ है। कई ढोंगी बाबा है, जो भोली-भाली जनता को बेवकूफ बनाकर उनका शोषण करते हैं।

फिल्म में ही एक डॉयलाग है, जिसमे करसन दास कहते है कि "ये महाराज जाएंगे तो दूसरे आ जाएंगे इसलिए मेरी लड़ाई महाराज से नहीं अंधविश्वास और पाखंड से है। मेरी लड़ाई धर्म से नहीं धर्म के ठेकेदारों से है।" महाराज की कहानी '18 वीं सदी के नई सोच वाले नौजवान, समाज सुधारक, पत्रकार करसनदास मुलजी (जुनेद खान) के हिम्मत की दास्तान है। करसन दास एक गुजराती समाज सुधारक, लेखक और पत्रकार थे और वो हमेशा से ही पाखंड का विरोध करते थे। ऐसे में उनके सामने उनके धर्म के ही एक महाराज जादूनाथ जी महाराज (जयदीप अहलावत) जिन्हें सब "जेजे" के नाम से पुकारते थे, उनका पाखंड सामने आता है। जेजे करसनदास की मंगेतर किशोरी (शालिनी पांडे) का शारीरिक शोषण करते हैं तब करसन दास इस जेजे की सच्चाई को पूरी दुनिया के सामने लाते हैं। इसकी वजह से जेजे की इज्जत की धज्जियां उड़ जाती हैं और वो करसन दास पर मानहानि का दावा ठोक देता है। फिल्म की कहानी अच्छी है। सबसे बेस्ट है फिल्म की सिनेमेटोग्राफी। सभी सीन एक दम भव्य हैं। भव्य हवेली, जादूनाथजी महाराज (जयदीप अहलावत) और हवेली के सभी सेवकों के कपड़े, ज्वैलरी सबकुछ बहुत भव्य और सुंदर हैं। डायलॉग भी अच्छे हैं। जयदीप अहलावत की एक्टिंग बहुत अच्छी है। महाराज के रोल में जचतें हैं। किशोरी बनी शालिनी पांडे ने भी अच्छी एक्टिंग की है और एक गुजराती लड़की के रोल में बहोत सुंदर दिखी है। शर्वरी बाघ ने भी अच्छा काम किया है। जुनेद खान की एक्टिंग कुछ खास नहीं है। फिल्म में वो गुजराती समाज सुधारक बने हैं इसलिए वो कुछ संवाद गुजराती में बोलते है, लेकिन वो ठीक से गुजराती भाषा नहीं बोल पाए हैं। फिल्म में एक गीत है, जिसमें उन्हें गुजराती गरबा करना है वो भी वो ठीक से नहीं कर पाए।

फिल्म में बेवजह दो-दो प्रेम कहानियां घुसा दी हैं और बेवजह के गाने भी जबरदस्ती घुसाए गए हैं। फिल्म का पहला गीत अच्छा है और फिल्म के लिए जरूरी भी लगता है, लेकिन उसके बाद के गाने बेवजह ही लगे हैं। फिल्म में कोर्ट के सीन्स बहुत कम हैं जब की ये पूरी फिल्म एक कोर्ट केस पर आधारित है। इन सब कमियों की वजह से फिल्म थोड़ी सी नाटकीय लगती है। गुजराती नॉवेल "महाराज" आप पढ़ेंगे तो इस केस की गहराई को और जान पाएंगे। जितनी गहराई से नॉवेल इस संवेदनशील विषय को दिखाती है उतनी गहराई से फिल्म नहीं दिखा पाती, लेकिन फिर भी फिल्म एक बार देखने योग्य है।

समीक्षक : काजल परमार

बागवानी के शौकीन मलिहाबादी बाशिंदे

मलिहाबाद का जिक्र अफरीदी पठानों और मैंगो मैन के बिना अधूरा है। फिलहाल बात मैंगो मैन की। हाजी कलीम उल्लाह खान मैंगो मैन के नाम से प्रसिद्ध हैं। बागवानी के शौकीन हाजी साहब मलिहाबाद के बाशिंदे हैं। चौदह एकड़ बाग के मालिक हैं। महज 14 बरस की उम्र में उन्होंने आम की एक ऐसी पौध तैयार कर दी थी,जिसमें आम की सात अलग किस्मों के फल आते थे। आज की तारीख में उनके नाम एक ऐसे पेड़ की ईजाद है,जिसमें आम की तीन सौ किस्में फलती हैं। इस पेड़ की उपज ने उन्हें अंतर्राष्ट्रीय फलक पर शोहरत दिलवाई और भारत सरकार ने उन्हें पद्मश्री (2008) से नवाजा। उनके उगाए आम देश के विभिन्न हिस्सों में तो पहुंचते ही हैं खाड़ी के देशों में भी उनकी अच्छी मांग है। मलिहाबाद की शोहरत के पायदान तमाम लोगों ने जोड़े हैं। इन नामों में कलीम उल्लाह खान का नाम भी इतिहास में दर्ज होगा।

लखनऊ के किसी नवाब का किस्सा है शायद। सर्दियों की एक रात गोमती के किनारे सियारों का कोई झुंड हुआं-हुआं कर रहा था। नवाब साहब की नींद में खलल पड़ा तो मीर मुंशी को फौरन तलब कर इस शोर की वजह पता करने के लिए भेजा गया। मीर मुंशी ने सुबह-सुबह नवाब साहब के हुजूर में पेश होकर बताया कि सियारों का एक बड़ा झुंड गोमती के किनारे मुकीम है और लखनऊ की कड़कड़ाती ठंड से बेजार होकर रो-रो कर हुजूर से फरियाद करता है। नवाब साहब का नर्म दिल पसीजा और हुक्म हुआ कि सबको कंबल अता किए जाएं। हुक्म पाते ही मीर मुंशी ने खजाने से दस हजार कंबल खरीदने की रकम जारी करवाई और इस नेक काम के लिए बाजार का रुख किया।

किस्सा मुख्तसर यह कि रात में फिर वही हादसा हुआ और नींद टूटने से परेशान हुए नवाब साहब ने गुस्से में तिलमिलाते हुए बेईमान मीर मुंशी का सर कलम करने के लिए अपनी तलवार निकाल ली। मीर मुंशी तनिक न घबराया और बोला: हुजूर,जान आपकी ही दी हुई है,जब चाहे ले लें,लेकिन इतना ही अर्ज करता हूं कि मैं खुद अभी-अभी इन सियारों के सरदार से मिलकर आ रहा हूं और मैंने ही उन्हें आपकी फैय्याजी के लिए शुक्रिया अदा करने को कहा है। सो वे गा-गा कर आपका शुक्रिया अदा करते हैं। उनका कोई कसूर नहीं। कहते हैं कि नवाब साहब उस रात चैन की नींद सोए और मीर मुंशी की जान बची।

डॉ. नीलिमा पांडेय
प्रोफेसर, लखनऊ विश्वविद्यालय

शायरी की दुनिया में गालिब बेजोड़ हैं। शोहरत ऐसी की किसी तआरुफ के मोहताज नहीं। उनके नाम के वर्क से टूटा-फूटा कचरा भी वर्चुअल दुनिया में दाद पाकर इठलाता हुआ मिल जाता है। गौरतलब बात ये है कि अपने दौर में उनका वक्त मुफलिसी में गुजरा। दाद और वाह! वाह! जरूर हासिल हुई पर उसमें भी असल बरकत बाद की ही है।

बहरहाल वक्त उन पर कैसा भी पड़ा हो दिल के वो बादशाह थे। जिक्र है कि अपनी पेंशन के मामले की पैरवी करने कोलकाता जाते हुए वह लखनऊ का रास्ता पकड़ते थे। दसहरी आमों की मिठास और खुशबू को इसकी वजहों में शामिल किया गया है। आम पर गालिब की एक मसनवी भी है : 'दर-सिफत-ए -अंबा' जिससे इस बात की तस्दीक होती है कि आम उन्हें खासे पसंद थे। इसी सिलसिले में गालिब का एक शेर मिलता है : मुझसे पूछो तुम्हें खबर क्या है/ आम के आगे नेशकर क्या है। (नेशकर गन्ने को कहते हैं)

टुंडे के गलौटी कबाब

लखनऊ का टुंडे कबाब अपने अनोखे स्वाद की वजह से बेइंतहा मशहूर है। लंबे अर्से से इस दुकान के कबाब ने स्वाद की दुनिया में अपना दबदबा कायम रखा है।

मुगलिया जायके का यह गलावटी कबाब लखनऊ में सन् 1905 ईसवी में अस्तित्व में आया। किस्सा है कि किसी बुजुर्ग हो चले भोपाली नवाब को सुस्वादु व्यंजनों से महरूम न रखने के लिए खानसामे से इसे ईजाद किया। तमाम कवायद के साथ पपीते और सैकड़ों मसालों के जोड़ से इसे ऐसा बनाया कि इसे खाने में किसी तौर कोई मशक्कत न करनी पड़े। इधर आपने निवाला मुंह के भीतर रखा,उधर वह मक्खन की तरह पिघलता हुआ आत्मा को तर करता उदरस्थ।

चौक टुंडे कबाब के मालिक रईस अहमद अपने वालिद, हाजी मुराद अली के हवाले से बताया करते थे कि उनके पुरखे भोपाल के नवाब के यहां खानसामा हुआ करते थे। बाद के दिनों में जब उनके वालिद हाजी मुराद अली नाबालिग ही थे,उनका परिवार लखनऊ बस गया। लखनऊ में उन्हें जो बरकत और शोहरत मिली कि बस यहीं के होकर रह गए।

बहरहाल लखनऊ में हाजी मुराद अली के वालिद ने चौक इलाके के ऐतिहासिक अकबरी गेट के करीब एक छोटी सी दुकान से गलौटी कबाब को लोगों के दस्तरखान तक पहुंचाना शुरू किया। अकबरी गेट के पासंग अपने सफर की शुरुआत में उन्हें इल्म भी न रहा होगा कि उनका कबाब इतिहास में 'अकबरी गेट' सरीखा ही मशहूर होने वाला है।

जिस दौर में उनका कबाब अपने नन्हें कदमों से शोहरत के पायदान चढ़ रहा था,लखनऊ अपनी नवाबी रवायतों के बचे-खुचे सिलसिलों को जिंदा रखने में मशगूल था। इन सिलसिलों में एक पतंगबाजी भी थी।

हाजी मुराद भी पतंगबाजी का शौक रखते थे। एक दफे इस शौक की बदौलत उनकी जान सांसत में पड़ गई। पतंग के पेंच लड़ाते-लड़ाते वह अपना एक हाथ घायल कर बैठे। ये कोई छोटी-मोटी चोट नहीं थी। मुराद साहब को इस बाबत अपने हाथ को शरीर से जुदा करना पड़ा।

खैर! जिंदगी की तकलीफें अपनी जगह और उसकी रफ्तार अपनी जगह। उदास मायूस मुराद ने इसे ही नसीब मान वालिद के साथ अपनी कबाब की दुकान में रम गए। ग्राहकों ने एक हाथ की कमतरी से उन्हें एक नए नाम से नवाज दिया। उन्हें "टुंडे" कहा जाने लगा और उनकी दुकान 'टुंडे कबाब' के नाम से पहचानी गई।

यकीनन जिस किसी ने पहली बार उन्हें ये नाम दिया होगा वो कोई रहमदिल इंसान तो न होगा,लेकिन वक्त की फितरत देखिए, मजाहिया तंज ने उन्हें इतिहास में मशहूर कर दिया। उन्हें उनके कबाब के मार्फत बाकमाल शोहरत हासिल हुई जो बदस्तूर जारी है।

इतिहास के झरोखे से

पंचाल राज्य का गौरवशाली इतिहास

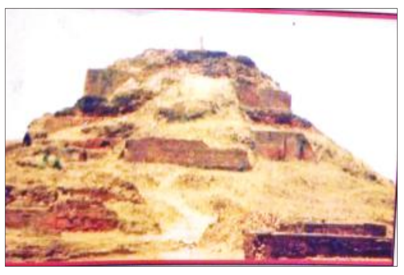

प्रो. गिरिराज नन्दन
इतिहासकार, आंवला, बरेली

कठेरिया राजपूतों का उत्थान

महमूद गजनवी के आक्रमण के पश्चात पंचाल का राजधानी नगर अहिच्छत्र समाप्त हो गया। इस क्षेत्र में कोई भी प्रशासनिक एकता नहीं रही। प्रभुत्व एवं स्वामित्व के लिए विभिन्न राजपूत वंशों ने लगभग दो सौ वर्षों तक निरंतर संघर्ष किया। इन्हीं परिस्थितियों में कठेरिया राजपूतों ने यहां अपना वर्चस्व स्थापित कर लिया। उनका कठेर संभाग पर आधिपत्य किस समय स्थापित हुआ तथा अधिकार करने वाले पहले राजाओं के नामों के बारे में कोई निश्चित उल्लेख प्राप्त नहीं होता, जो उल्लेख प्राप्त है उनके आधार पर उन्होंने यहां की मूल जातियों को निष्कासित करके अपना अधिकार जमाया। शाहजहांपुर गजेटियर के अनुसार रुहेलखंड का पूर्वी भाग बाछल राजपूतों के आधिपत्य में था जब तक कि सन् 1174 में कठेरिया राजपूतों ने यहां अपना आधिपत्य स्थापित नहीं कर लिया।

मोहम्मद गौरी के आक्रमण के समय इस क्षेत्र का एकमात्र व्यवस्थित नगर बदायूं था। बदायूं के अतिरिक्त सारे कठेर पर कठेरियों का अधिकार था, लेकिन इनका कोई राजधानी नगर नहीं था। विभिन्न सैनिक दुर्ग थे,जो कि गढ़ कहलाते थे। उस काल में राजा के लिए राय या राव का प्रयोग किया जाता था।

सुल्तान मोहम्मद गौरी द्वारा बदायूं को जीतने के बाद यहां सरकार (सूबा मुख्यालय) बनाने के समय तथा बाद के काल में राजपूतों का अधिकार इस कठेर के क्षेत्र में कहां तक रहा यह निश्चित विदित नहीं है, लेकिन दिल्ली के मुसलमान सुल्तानों ने कठेर को अपने आधिपत्य में रखने के लिए समय-समय पर विकराल सैनिक आक्रमण किए तथा भय एवं आतंक बनाए रखने के लिए क्रूरतापूर्वक दमन भी किए जिनका यह राजपूत मुकाबला करते रहे, लेकिन उनमें उनके मुकाबले की वह सैनिक शक्ति नहीं थी, जो उनका सीधा मुकाबला करते इसलिए वह लोग अधिकतर वन-युद्ध (छापामार युद्ध) पद्धति भी अपनाते थे तथा इस क्षेत्र पर अपना अधिकार बनाए रखते थे। यह क्रम दिल्ली के सल्तनतकालीन बादशाहों के पूरे काल लगभग तीन सौ वर्ष तक चला।

बदायूं पर कुतुबुद्दीन ऐबक का आधिपत्य- दिल्ली के पृथ्वीराज चौहान तथा कन्नौज के राजा जयचंद को परास्त करने के बाद शहाबुद्दीन मोहम्मद गौरी ने अपने प्रतिनिधि कुतुबुद्दीन ऐबक को बदायूं पर आक्रमण करने भेजा। इस समय बदायूं का राजा धर्मपाल था। ऐबक के आक्रमण का मुकाबला वह नहीं कर सका तथा हार गया। बदायूं के क्षेत्र पर ऐबक का अधिकार हो गया (सन् 1196)। ऐबक ने संभल पर भी अधिकार स्थापित कर लिया। सन् 1202-3 तक ऐबक पुनः बदायूं आया। यहां उसने तुर्कों की जड़ें मजबूत करने का प्रयास किया,लेकिन यहां के राजपूतों के अस्तित्व को समाप्त कर देना आसान नहीं था। बदायूं को इस क्षेत्र का सूबा मुख्यालय बनाया गया तथा यहां तुर्की शासन प्रणाली स्थापित करके सूबेदार की नियुक्ति की गई।

आंवला टकसाल नगर (1200 ई.) बनाया गया- आंवला इस समय एक छोटा कस्बा था। यहां कठेरिया राजपूतों का गढ़ (दुर्ग) था। वह यहां से बदायूं, अवध तथा गंगा तक के क्षेत्र पर अधिकार स्थापित रखते थे। तुर्कों ने इस पर अधिकार कर लिया तथा इसको टकसाल नगर 4 बनाया। यहां से कुतुबुद्दीन ऐबक ने अपने स्वामी शहाबुद्दीन मोहम्मद गौरी के नाम से सिक्के ढलवाए। आंवला में जो सिक्के ढले वह तांबे के थे। उन पर मोहम्मद बिन साम (शहाबुद्दीन मोहम्मद गौरी का संक्षिप्त नाम) लिखा हुआ था। यह षट्भुज रूप में दो त्रिभुजीय रूप से खुदा हुआ था। इसका वजन 2.26 ग्राम तथा इसका नाप 06 इंच है। सिक्के की पलट पर आंवला लिखा हुआ है। ऐबक ने आंवला में टकसाल स्थापित की और इस समय यहां राजपूतों का गढ़ (दुर्ग) था इससे यह विदित होता है कि इस समय से काफी पूर्व से आंवला राजपूतों का शक्तिशाली गढ़ रहा होगा।

कठेर पर अधिकार के लिए दिल्ली सुल्तानों के आक्रमण- इल्तुतमिश के दिल्ली के सिंहासन पर बैठने के समय तक यहां तुर्कों का अधिकार स्थायी नहीं रहा। सन् 1206 में फर्रुखाबाद व बदायूं पर राजा हरिश्चन्द्र ने पुनः अधिकार कर लिया। पुनः इल्तुतमिश ने इस क्षेत्र को अपने अधिकार में किया, लेकिन स्थायी रूप से यहां तुर्कों का अधिकार इल्तुतमिश के सुल्तान बनने के बाद हुआ जब उसने यहां के राय मान को पराजित करके इस क्षेत्र को अपने अधिकार में किया। लगभग तीस वर्षों तक यहां शांति रही। मिनहाजुससिराज के अनुसार सन् 1242-43 में बदायूं के सूबेदार ताजुद्दीन सन्जर कुतलक खां ने कठेर पर कई आक्रमण किए। बुरी तरह दमन करके क्षेत्र को अपने अधीन किया और बहुत से स्थानों पर मस्जिदों का निर्माण कराया।

ईटों की कला का चरमोत्कर्ष निबिया खेड़ा

कानपुर परिक्षेत्र में रिंद और यमुना नदी के बीच ईटों से निर्मित विकास की यात्रा संजोए अनेकों समृद्ध पुरातात्विक स्मारक हैं। यह स्मारक मैदानी क्षेत्र में पकी ईटों के सौंदर्य की विकास यात्रा के अप्रतिम उदाहरण हैं।

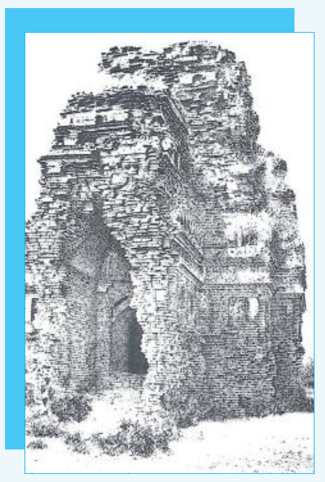

धर्म प्रकाश गुप्त
इतिहास विश्लेषक, कानपुर

घाटमपुर से लगभग 13 किलोमीटर दूर निबिया खेड़ा ग्राम में प्रतिहार कालीन पंचायतन शैली का एक मंदिर समूह स्थित है। परिसर में ही एक केन्द्रीय मंदिर जो भगवान शिव को समर्पित है के साथ चार छोटी ईटों के मंदिर मौजूद हैं। इन मंदिरों का निर्माण काल 9 वीं से 10 वीं शताब्दी के बीच का माना जाता है। मुख्य मंदिर 30 फुट से अधिक ऊंचा है। मंदिर का प्रवेश द्वार प्रस्तर निर्मित है, जिसमें नवग्रहों का अंकन अत्यंत कलात्मक रूप से किया गया है। ललाट बिंब पर गज लक्ष्मी का अंकन है और प्रस्तर चौखट पर गंगा और यमुना को अत्यंत सुंदर ढंग से उत्कीर्ण किया गया है। प्रवेश द्वार के सम्मुख दो नंदी प्रतिमाएं भी अवस्थित हैं। गर्भ गृह की दीवार पर वीणाधारी शिव एवं ब्रम्हा की प्रतिमाएं उत्कीर्ण हैं। गर्भ गृह के मध्य में शिवलिंग स्थापित है। मूलतः यह एक वैष्णव मंदिर था। कालांतर में इसमें शिवलिंग स्थापित किया गया। मंदिर के बाहरी ओर आवलक तक लंबवत,त्रिकोणात्मक, 8 पहलुओं में भद्र एवं कर्ण विभाजित हैं।

मंदिर की बाहरी दीवारें नक्काशीदार ईटों से आच्छादित है तथा आठों पहलुओं के बीच में कमल की आकृति में निर्मित ईटों से लंबवत स्तंभ बनाए गए हैं,जिनको देखकर यह लगता है कि जैसे कमल के फूलों की माला उत्कीर्ण हो। बाह्य दीवारों में आले भी बने हुए है संभवतः उनमें कुछ कलात्मक फलक रहे होगें। मंदिर के चारों कोनों पर लघु मंदिर स्थापित हैं,परंतु उन मंदिरों में कोई भी प्रतिमा नहीं है। इस मंदिर समूह को देखकर कानपुर परिक्षेत्र में ईटों के कलात्मक विकास का चर्मोत्कर्ष देखकर लोग आश्चर्यचकित रह जाते हैं। लघु मंदिरों में ईटों द्वारा निर्मित त्रिकोणात्मक महराब दृष्टिगोचर होती है। इस स्मारक को देखकर इसमें प्रयुक्त मिट्टी की ईटों को देखकर यह लगता है कि इन्हें किसी उच्च तकनीकी से इस तरह पकाया गया है कि वह पत्थर के विकल्प का कार्य कर रही है। इन मंदिरों की खोज वर्ष 1960 में अधीक्षण पुरातत्वविद डॉ. लाल मोहन बहल ने की थी।

मंदिर की भव्यता, सुंदरता तथा प्राचीनता को देखते हुए भारतीय डाक विभाग ने इस पर एक डाक टिकट वर्ष 2020 में जारी किया था। उस समय ईटों के मंदिर पर एक सीरीज डाक विभाग द्वारा जारी की गई थी,जिसमें निबिया खेड़ा मंदिर को अत्यंत महत्व दिया गया था। इस स्मारक का ईष्टिका कला सौंदर्य पर्यटकों का मन मोह लेता है और प्रतिहार कालीन इस स्मारक को देखे बिना ईटों के कलात्मक विकास की कल्पना भी संभव नहीं है। इस परिक्षेत्र में मौजूद अन्य ईष्टिका कला के स्मारकों की भांति इस मंदिर में भी निर्माण संबंधी कोई उल्लेख नहीं मिलता है। मंदिर के समीप एक बड़ा तालाब भी है,जिसमें ईटों की दीवार के अवशेष प्रतिबिंबित होते है। स्मारक भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा संरक्षित है तथा परिसर का रख-रखाव भी दर्शनीय है। मुख्य मार्ग से थोड़ा दूर होने के कारण संभवतः यह मंदिर मुगल आक्रांताओं के प्रकोप से बच गया और गुमनामी के दौर में चला गया। इस स्मारक के महत्व को देखते हुए कानपुर के नागरिकों ने इसे भी विश्व विरासत घोषित करने हेतु अपना प्रस्ताव भारत सरकार के पास भेजा हुआ है। मंदिर परिसर के समीप काफी स्थान होने के कारण इसको एक सुरम्य पर्यटक केन्द्र के रूप में विकसित किया जा सकता है। पुरातत्व विभाग भी इसे मानवीय रचनात्मक प्रतिभा का उल्लेखनीय उदाहरण मानता है और इसे विश्वस्तरीय स्मारक महसूस करता है।

दुर्दशा का शिकार राजा बखत अली का किला

"मैंने इतना सुंदर प्राणी शायद ही देखा हो? यही कहा था स्लीमैन ने शाहगढ़ के राजा अर्जुन सिंह के घोड़े को देखकर। शाहगढ़ सागर से 43 मील उत्तर पूर्व में कानपुर रोड पर स्थित है। वनाच्छादित उतंग शैलमाला की तराई में यह लांच नदी के दक्षिणी किनारे पर बसा है। लंबे समय से यहां जाने की इच्छा थी ,जो तब पूरी हुई जब चुनाव की ड्यूटी के दौरान मतदान केंद्रों का निरीक्षण करते हुए यहां जाना हो पाया।

रूपेश उपाध्याय
अपर-कलेक्टर, सागर

शाहगढ़ का किला 15 वीं शताब्दी में मूलतः गोंड शासकों के अधीन था इस गढ़ के अधीन 750 गांव थे। बाद में यह राजा छत्रसाल बुंदेला के अधीन आया। छत्रसाल ने इसे वसीयत द्वारा अपने पुत्र हिरदे शाह के नाम कर दिया। हिरदेशाह की मृत्यु सन् 1739 में हो जाने पर इस किले को बाजीराव पेशवा की सहायता से उनके कनिष्ठ पुत्र पृथ्वीराज ने ले लिया। कहा जाता है कि जब सन् 1759 ई. में अहमदशाह अब्दाली ने भारत पर आक्रमण किया तब मराठों की सहायता के लिए 5000 व्यक्तियों की सेना शाहगढ़ से भेजी गई थी। कर्नल स्लीमैन सन् 1835 ई. में यहां आया था उसने अपनी पुस्तक "रेम्बल्स एंड रिकलेक्सन" में शाहगढ़ के राजा अर्जुन सिंह एवं उसके भाई तख्त सिंह द्वारा किए गए उसके स्वागत का विस्तार से वर्णन किया है। उसने राजा अर्जुन सिंह के पोशाक, स्वागत के लिए आयोजित नृत्य, गायन कार्यक्रम, उसमें लगाए गए शामियाना, घास पर बिछे गलीचा के साथ-साथ उसके घोड़ों का भी विस्तार से वर्णन किया है।

स्लीमेन राजा से भेंट के समय राजा के अस्तबल में पोषित सुंदर, चिकने, उत्तम नस्ल के घोड़ों से बहुत ही प्रभावित हुआ। अपने वर्णन में उसने उल्लेख किया है कि "मैंने इतना सुंदर प्राणी शायद ही देखा हो।" राजा अर्जुन सिंह का भतीजा

राजा बखत बली 150 घुड़सवार तथा 800 पैदल सैनिकों के साथ सन् 1857 ई. की क्रांति में शामिल हो गए थे। उन्होंने चरखारी पर आक्रमण करते समय तात्या टोपे का सहयोग किया था। नाना साहब ने उन्हें ग्वालियर आमंत्रित किया। ग्वालियर जाते समय रास्ते में 28 सितंबर 1858 को राजा बखत बली को गिरफ्तार कर लिया गया। उन्हें राजबंदी के रूप में मोरी दरबाजा में हाकिम राय की हवेली लाहौर में रखा गया। उनके राज्य को जब्त कर लिया गया,जिसके भाग अब झांसी, दमोह और सागर जिले में है। राजा बखत बली की मृत्यु 29 सितंबर 1873 को वृंदावन में हुई थी। शाहगढ़ में किले के खंडहरों के अलावा राजा अर्जुन सिंह द्वारा बनबाए गए दो मंदिर है इसमें बड़े मंदिर में भित्ति चित्रों की सजावट है।

यहां चार समाधियां तथा राज परिवार की एक विशाल समाधि भी है। शाहगढ़ के बने मिट्टी के बर्तन बहुत प्रसिद्ध हैं। शाहगढ़ के संक्षिप्त प्रवास के हम उस किले को देखने जरूर गए,जहां कभी स्वतंत्रता सेनानी राजा बखत बली रहे थे। अब यह किला अपनी दुर्दशा का शिकार होकर खंडहर में तब्दील हो गया है।

शांति और सह-अस्तित्व का अनुयायी जहांगीर

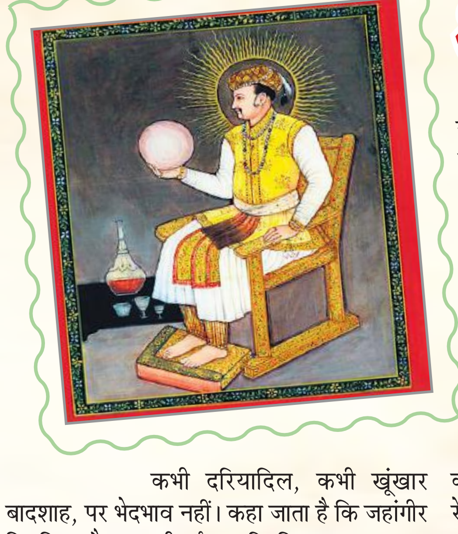

कभी दरियादिल, कभी खूंखार बादशाह, पर भेदभाव नहीं। कहा जाता है कि जहांगीर विचलित और बदलती हुई मनः स्थिति का बादशाह था। वह कभी दरियादिल दिखता,तो कभी खूंखार बन जाता। जहांगीर की क्रूरता का ब्यौरेवार वर्णन एक इतिहासकार ने अपनी किताब में किया है।

अपने खुद के बेटे खुसरो के बगावत करने पर जहांगीर ने उसे मौत की सजा न देकर उसकी पलकें सिलवा दी थीं। आम तौर पर एक बार इस तरह की सजा देने के बाद शायद ही जहांगीर ने उसे बदला हो। हां, अपने बेटे खुसरो को सजा दिए जाने के बाद,जहांगीर ने उसकी आंखों का इलाज अवश्य करवाया था,लेकिन उसकी आंखों की रोशनी पूरी तरह से वापस नहीं आई।

धर्मतंत्र के राज्य की वर्तमान अवधारणा के आधार पर ऐसे राज्य के स्वरूप की व्याख्या इस रूप में की जा सकती है कि वह राज्य जो धर्मपरस्त, धर्म पर आधारित अथवा जिस राज्य का लक्ष्य किसी विशेष धर्म को प्रोत्साहित करना हो और उसका अपना एक धर्म हो, उसी को धर्म तंत्र का राज्य माना जाना चाहिए। जहांगीर के संदर्भ में मुगल राज्य का स्वरूप मजहबी नहीं माना जा सकता। बादशाह जहांगीर का व्यक्तिगत जीवन, खलीफा के साथ उसका संबंध, उलेमा वर्ग का प्रशासन में स्थान तथा इस्लाम के प्रसार के लिए उसके द्वारा अपनाई जाने वाली नीतियों की समीक्षा के आधार पर यह स्पष्ट हो जाता है कि जहांगीर के विशेष संदर्भ में मुगल राज्य के स्वरूप को धर्मतंत्र सम्मत नहीं माना जा सकता।

सच यह भी है कि जहांगीर ने शरई के नियमों के पालन पर विशेष बल नहीं दिया, इस्लाम में वर्जित चीजों की भी कई अवसरों पर बादशाह ने परवाह नहीं की। स्वर्ण और रजत के आभूषण तथा रेशमी वस्त्रों का प्रयोग भी जहांगीर ने प्रचुर मात्रा में किया। उन्होंने इस्लाम धर्म में हराम माने जाने वाले ज्योतिष में विश्वास भी व्यक्त किया था। उसके राजकाज की अधिकतर अवधि में उलेमा का शासन में प्रभाव अति सामान्य दिखता था। शासन के आरंभिक वर्षों में जहांगीर ने अपने सम्मान को बनाए रखने का प्रयास जरूर किया, परंतु उसे आशातीत सफलता कभी नहीं मिली। एक इतिहासकार के शब्दों में- "गैर मुस्लिमों के प्रति बादशाह न्यूनतम हस्तक्षेप की व्यक्तिगत नीति का अनुसरण करता था।"

राजगोपाल सिंह वर्मा
वरिष्ठ लेखक, आगरा

बादशाह के रूप में जहांगीर अपने पिता और पूर्ववर्ती मुगल शासक अकबर की सुलहकुल अर्थात् सबके साथ शांति या सह-अस्तित्व की नीति का मात्र प्रशंसक ही नहीं,अनुयायी भी था। सदर-ए-सुदूर का जो पद अकबर ने सृजित किया था,उसका कार्य जनता के नैतिक आचरण की देखरेख करना,उन पर नियंत्रण कर शिक्षा व्यवस्था का पर्यवेक्षण करना तथा विरोधी कार्यों की सूचनाएं बादशाह तक पहुंचाना हुआ करता था। जहांगीर ने इस अधिकारी का पद स्थायी प्रकृति का बनाए रखा। इससे स्पष्ट होता है कि निश्चित रूप से उसके शासनकाल में रूढ़िवादी परंपरा का पालन करने की सुविधा तो नहीं थी,फिर भी ऐसे साक्ष्य भी नहीं मिलते कि इस पद पर कार्य करने वाले किसी व्यक्ति ने गैर मुस्लिमों के प्रति भी उसी प्रकार की नीति कार्यान्वित करने की संस्तुति बादशाह को दी हो,जिससे कि गैर मुस्लिमों का अकल्याण होता हो।

जब जहांगीर के राज्याभिषेक को तीन वर्ष हुए थे तो आगरा के पांच कोस निकट एक जश्न मनाया गया था। उस स्थल पर जाते समय जो वर्णन बादशाह ने स्वयं अपने आत्मचरित में अपने पिता के सम्मान में किया था,वह इस प्रकार था, "गत सम्राट अकबर का मकबरा मार्ग में पड़ता था, इसलिए उसके पास से जाते हुए यदि हम उसकी 'जियारत' का सौभाग्य प्राप्त करें तो जो लोग अदूरदर्शी हैं, वे यही समझेंगे कि हमने ऐसा इसलिए किया कि हमारे मार्ग में पड़ता था। इसलिए हमने निश्चय किया कि आगरे पहुंचने पर फिर वहां से पैदल चलकर हम उस मकबरे की यात्रा करें,जो ढाई कोस पर है,जिस प्रकार हमारे पिता ने हमारे जन्म पर आगरे से अजमेर तक की थी। क्या ही अच्छा होता कि हम सिर के बल ऐसा कर सकते।"

बादशाह जहांगीर के काल में राजकोष का प्रयोग इस्लाम धर्म के कल्याण के लिए हुआ करता था,परंतु इस कार्य को धर्म तंत्र राज्य की संज्ञा नहीं दी जा सकती है। वस्तुतः यह एक धर्म केंद्रित राज्य भी नहीं था। यह जिन विधियों पर आधारित था वे कानून केवल इस्लामी कानून के रूप में नहीं माने जा सकते थे। जेएन सरकार ने मुगल शासन पद्धति के विषय में वृहद विचार करते हुए अपनी किताब में स्पष्ट किया है कि जहांगीर के काल में मुगल राज्य का कल्याणकारी स्वरूप दृष्टिगत होता है। एक अन्य इतिहासकार ने भी अपना मत व्यक्त करते हुए मुगल शासन के दो उद्देश्य बताए हैं- मालगुजारी वसूल करना तथा पर्याप्त सेना का पोषण किया जाना। एक अन्य इतिहासकार ने जहांगीर के विषय में लिखा था कि उन्होंने अपना ध्यान मुगलकालीन मनसबदारी प्रथा जो कि पूर्व से प्रचलित थी,पर केंद्रित करते हुए स्पष्ट किया कि मनसबदारी प्रथा का उद्देश्य एक निश्चित संख्या में व्यक्तियों को सैनिक सेवा के लिए शाही अधिकारियों के कमान में सदैव तैयार रखने का होता था।

उस समय की शासन व्यवस्था पर दृष्टिपात से यह निष्कर्ष निकलता है कि संपूर्ण मुगल काल की तरह बादशाह जहांगीर के शासनकाल में भी शासकीय तथा सैनिक सेवा में कोई भेद नहीं दिखता था।

मुगल बादशाह जहांगीर यद्यपि अकबर की तरह उदार न बन सका,परंतु उन्होंने उन नीतियों को जिनका संबंध राज्य के जातिगत विभेद से था,समाप्त करने की दिशा में महत्वपूर्ण काम किया। जहांगीर ने प्रशासन के आधारभूत स्वरूप व आदर्शों को अपने पिता के समान ही रहने दिया। बादशाह ने किन्हीं इस्लामी वर्ग शक्तियों के प्रभाव से उनमें परिवर्तन या संशोधन करने का प्रयास नहीं किया। इतिहासकार इस तथ्य को स्वीकार करते हैं कि मुगल राज्य एक सांस्कृतिक राज्य था और यह बात विशेष रूप से बादशाह जहांगीर के संदर्भ में बिल्कुल उपयुक्त बैठती है। उनका राज्य एक ऐसा राज्य था,जो सैनिक, पुलिस अथवा धर्मतंत्र राज्य से ऊपर उठकर एक सांस्कृतिक राज्य की सीमा तक पहुंच गया था।